विश्व हिंदी समाचार
Vishwa Hindi Samachaar
विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक सूचना-पत्र

वर्ष: 18 | अंक: 65 | मार्च , 2024

विश्व हिंदी दिवस 2024

विश्व हिंदी दिवस को धूम-धाम से मनाना अब एक स्थापित परम्परा है। विश्व के कोने-कोने में हिंदी प्रेमी इसे एक पर्व के रूप में मनाते हैं। हिंदी से संबंधित अनेक गतिविधियाँ, प्रतियोगिताएँ, संगोष्ठियाँ, कार्यशालाएँ, परिचर्चाएँ, सांस्कृतिक-साहित्यिक कार्यक्रम आदि विश्व हिंदी दिवस के महत्त्वपूर्ण अंग बन गए हैं। वर्ष

2024 में विश्व भर में हिंदी की अनेक गतिविधियों का आयोजन हुआ। विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस सहित भारत, चीन, वेनेज़ुएला, न्यूज़ीलैंड, यू.के., श्रीलंका, सूरीनाम, फ़िजी, यू.ए.ई, कनाडा, जापान आदि देशों में हिंदी की धूम मची। विभिन्न देशों में विश्व हिंदी दिवस की गतिविधियों की रिपोर्ट इस अंक में पढ़ें।

पृ.2-9

विश्व हिंदी सचिवालय का 16वाँ कार्यारंभ दिवस

12 फ़रवरी, 2024 को विश्व हिंदी सचिवालय ने महात्मा गांधी संस्थान तथा इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र के सहयोग से '16वाँ कार्यारंभ दिवस' समारोह का भव्य आयोजन किया। यू.के. की स्वतंत्र हिंदी परामर्शदाता, डॉ. अरुणा अजितसरिया बीज-वक्ता रहीं। 'विश्व हिंदी साहित्य' के छठे संस्करण का लोकार्पण हुआ। इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र तथा महात्मा गांधी संस्थान के कलाकारों द्वारा नृत्य नाटिका प्रस्तुत की गई। 'पाठ, अनुवाद एवं निबंध' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला भी लगी।

पृ.3-4

जापान में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

2-4 फ़रवरी, 2024 को जापान में विदेश मंत्रालय और तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ़ फ़ॉरेन स्टडीज़ तथा भारतीय राजदूतावास, तोक्यो के संयुक्त तत्त्वावधान में एक अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन का विषय 'दक्षिण पूर्व एशिया में हिंदी की स्थिति' रखा गया था।

पृ. 9

'स्वयंसिद्धा' और 'नीदरलैंड की लोक कथाएँ' का लोकार्पण

22 मार्च, 2024 को इंदौर के ऐतिहासिक गांधी हॉल स्थित अभिनव कला समाज में शुभ संकल्प समूह व स्टेट प्रेस क्लब के संयुक्त तत्त्वावधान में तथा लोक संस्कृति संस्था : भावांजलि समूह के सहयोग से 'तूलिका के रंग' शीर्षक पर संगोष्ठी में पुस्तक 'स्वयंसिद्धा' (साझा संकलन) और डॉ. ऋतु शर्मा नन्नन पांडेय द्वारा रचित 'नीदरलैंड की लोक कथाएँ' पुस्तक का विमोचन हुआ।

पृ. 13-14

यू.के. हिंदी सम्मान समारोह

12 जनवरी, 2024 को भारतीय उच्चायोग, लंदन में विश्व हिंदी दिवस कार्यक्रम के अंतर्गत यू.के. हिंदी सम्मान समारोह भी हुआ। श्रीमती शैल अग्रवाल, श्री शिवकांत शर्मा, श्रीमती शशि वालिया सिंह, भवन, लंदन तथा श्रीमती शन्नो अग्रवाल को सम्मानित किया गया।

पृ. 14

श्रद्धांजलि : डॉ. उषा किरण खान एवं पंडित हरिराम द्विवेदी

11 फ़रवरी, 2024 को हिंदी और मैथिली भाषाओं के कथा-साहित्य में विशिष्ट स्थान रखने वाली लेखिका, डॉ. उषा किरण खान का निधन हुआ। वे बिहार की गौरव लेखिका थीं।

8 जनवरी, 2024 को हिंदी और भोजपुरी के प्रख्यात गीतकार, कवि एवं साहित्यकार पंडित हरिराम द्विवेदी 'हरि भैया' का निधन हुआ। वे आकाशवाणी और भोजपुरी जगत् से जुड़े हुए थे और बहुत लोकप्रिय थे। विश्व हिंदी सचिवालय की ओर से पुण्यात्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित है।

पृ. 15

इस अंक में आगे पढ़ें :

- सम्मेलन, संगोष्ठी, परिचर्चा, जयंती — पृ. 9-12
- आभासी कार्यक्रम — पृ. 12-13
- साक्षात्कार — पृ. 13
- लोकार्पण — पृ. 13-14
- सम्मान एवं पुरस्कार — पृ. 14-15
- संपादकीय — पृ. 16

ISSN 1694-2485

विश्व हिंदी दिवस 2024

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा विश्व हिंदी दिवस का आयोजन

उद्घाटन-सत्र

10 जनवरी, 2024 को विश्व हिंदी सचिवालय ने विश्व हिंदी दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री, माननीया श्रीमती लीला देवी दुकन-लछुमन रहीं तथा विशिष्ट अतिथि भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्रीमती नंदिनी के. सिंगला रहीं।

दीप-प्रज्वलन के साथ समारोह आरंभ हुआ और विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने स्वागत-संदेश प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि, माननीया श्रीमती लीला देवी दुकन-लछुमन ने शिक्षकों से आग्रह किया कि वे सही विधियों और सही साधनों का प्रयोग करके हिंदी सिखाएँ। महामहिम श्रीमती नंदिनी के. सिंगला ने भारत गणराज्य के प्रधानमंत्री, माननीय श्री नरेन्द्र मोदी का संदेश पढ़कर सुनाया। उन्होंने कहा कि विश्व हिंदी दिवस हमें अपनी भाषा और संस्कृति को दुनिया के समक्ष गर्व से प्रदर्शित करने का सुअवसर देता है। डॉ. क्रिस्तिना डोलिनिना ने बीज-वक्तव्य में बताया कि लिथुआनिया के एशियाई और ट्रांसकल्चरल अध्ययन संस्थान में एशियाई अध्ययन में बी.ए., आधुनिक एशियाई अध्ययन में एम.ए. तथा हिंदी में पी.एचडी के स्तर पर पढ़ाई होती है। बी.ए. के प्रथम सेमेस्टर में छात्रों को संस्कृत पढ़ाई जाती है और उन्हें देवनागरी लिपि तथा इंडो-यूरोपियन भाषाओं के इतिहास से परिचित कराया जाता है। दूसरे सेमेस्टर से छात्र हिंदी भाषा सीखना शुरू करते हैं। तीसरे सेमेस्टर में उनके हिंदी ज्ञान को बढ़ाया जाता है। चौथे सेमेस्टर में उन्हें हिंदी साहित्य के इतिहास से परिचित कराया जाता है। पाँचवें सेमेस्टर में छात्रों को भारतीय हिंदी साहित्य, प्रवासी हिंदी साहित्य और अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य से परिचित कराया जाता है।

डॉ. क्रिस्तिना डोलिनिना, जो कथक और ओड़िसी नृत्य शिक्षिका भी हैं, ने शांति का नृत्य प्रस्तुत किया और विश्व के विभिन्न देशों में हिंदी पढ़ने वाले विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने वीडियो प्रस्तुति के माध्यम से 'विश्व में हिंदी' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए।

समारोह में 'विश्व हिंदी पत्रिका' के 15वें अंक का लोकार्पण किया गया और अंतर्राष्ट्रीय हिंदी रिपोर्ताज-लेखन प्रतियोगिता के परिणामों की घोषणा की गई। विजेता इस प्रकार हैं :

1. अफ्रीका व मध्य पूर्व : प्रथम पुरस्कार - श्री आकाश आर्यनाईक (मॉरीशस), द्वितीय पुरस्कार - सुश्री प्रेरणा आर्यनाईक (मॉरीशस) तथा तृतीय पुरस्कार - श्रीमती याचना मिश्रा जांगी (मॉरीशस) 2. अमेरिका : प्रथम पुरस्कार - सोनिमा गायापरसाद (सूरीनाम), द्वितीय पुरस्कार - डॉ. हंसा दीप (कनाडा) तथा तृतीय पुरस्कार - विनीता तिवारी (अमेरिका) 3. एशिया व ऑस्ट्रेलिया : प्रथम पुरस्कार - डॉ. सुभाषिनी लता कुमार (फ़िजी) 4. यूरोप : प्रथम पुरस्कार - इंदु बरौट (यू.के.), द्वितीय पुरस्कार - मधु कुमारी चौरसिया (यू.के.) तथा तृतीय पुरस्कार डॉ. वंदना मुकेश (इंग्लैंड) 5. भारत : प्रथम पुरस्कार - डॉ. विनोद कुमार दुबे, द्वितीय पुरस्कार - डॉ. सुधा जगदीश गुप्त तथा तृतीय पुरस्कार - डॉ. पल्लवी मिश्रा।

एक दिवसीय कार्यशाला : 'द्वितीय भाषा अथवा विदेशी भाषा के रूप में हिंदी का परिचय'

एक दिवसीय कार्यशाला के प्रथम सत्र में मॉरीशस के शिक्षा मंत्रालय में सहायक हिंदी पर्यवेक्षिका, श्रीमती सोनवंती जानकी ने कहा कि प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षक अनेक शिक्षण विधियों का प्रयोग करते हैं, जैसे - प्रश्नोत्तर विधि, प्रयोगात्मक विधि, चित्रांकन विधि, कहानी-कथन विधि आदि।

वरिष्ठ व्याख्याता, डॉ. अलका धनपत ने पाठ्य-पुस्तक-निर्माण पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। उनके अनुसार पाठ्य-पुस्तकों में पात्रों के नाम सोच-समझकर रखे जाते हैं, जैसे 'आशीष' ताकि बच्चे को तालव्य (श) और मूर्धन्य (ष) दोनों ध्वनियों का अंतर पता हो सके। उन्होंने बताया कि पहली से छठी कक्षा तक की पाठ्य-पुस्तकों में छात्र 2000 शब्द सीख जाता है।

डॉ. क्रिस्तिना डोलिनिना ने कहा कि लिथुआनियाई भाषा तथा हिंदी की ध्वनियाँ लगभग समान हैं। इसीलिए उच्चारण में ज़्यादा कठिनाई नहीं होती है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

समारोह में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली के निदेशक, श्री चित्तरंजन त्रिपाठी ने 'गुन्नु बाई' नाटक की प्रभावशाली प्रस्तुति की। श्री चित्तरंजन त्रिपाठी ने 'गुन्नु बाई' के किरदार को जीवंत कर दर्शकों को मंत्र-मुग्ध कर दिया।

Newsletter WHS March 2024v3.indd 2 14/08/2025 16:12

भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्रीमती नंदिनी के. सिंगला ने आभार-स्वरूप श्री चित्तरंजन त्रिपाठी और नाटक-मंचन में अमूल्य सहयोग प्रदान करने हेतु राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की सहायक निदेशिका, श्रीमती चेतना वशिष्ठ, एसोसिएट प्रोफ़ेसर श्री यशराज जाधव म्हासु एवं सहायक प्रोफ़ेसर श्री अरुण कुमार मलिक को प्रतीक चिह्न प्रदान किया।

विभिन्न मंत्रालयों के अधिकारीगण, शैक्षिक, धार्मिक व अन्य संस्थाओं के प्रतिनिधिगण और मॉरीशसीय हिंदी लेखकों, शिक्षकों, छात्रों व हिंदी प्रेमियों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय की पूर्व हिंदी निरीक्षिका, श्रीमती अश्वीना देवी हेमू ने सभी सत्रों का मंच-संचालन किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

विश्व हिंदी सचिवालय का 16वाँ कार्यारंभ दिवस

उद्घाटन-सत्र

12 फ़रवरी, 2024 को विश्व हिंदी सचिवालय ने महात्मा गांधी संस्थान तथा इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र के सहयोग से '16वाँ कार्यारंभ दिवस' समारोह का भव्य आयोजन किया। समारोह का आरंभ दीप-प्रज्वलन तथा डॉ. मृदुल कीर्ति द्वारा लिखित एवं श्री विशाल मंगरू द्वारा संगीतबद्ध गीत 'केसरी हिंदी उगाओ' की प्रस्तुति से हुआ।

मॉरीशस गणराज्य के कार्यकारी राष्ट्रपति, महामहिम श्री मैरी सिरिल एडी ब्वासेज़ों, जी.ओ.एस.के. ने कहा कि हिंदी सौहार्द और समरसता की भाषा है और गांधीजी ने हिंदी को एकता की भाषा के रूप में प्रयोग किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने उपस्थित महानुभावों का स्वागत करते हुए बताया कि 16 वर्ष पहले विश्व हिंदी सचिवालय

ने अपना कार्य आधिकारिक रूप से आरंभ किया था। कार्यारंभ दिवस के अवसर पर हर वर्ष विशेष गतिविधियों का आयोजन किया जाता है।

यू.के. की स्वतंत्र हिंदी परामर्शदाता, डॉ. अरुणा अजितसरिया ने 'हिंदी में वाचन और लेखन कौशलों का विकास' विषय पर बीज-वक्तव्य

प्रस्तुत करते हुए बताया कि कोई भी देश तब तक पूर्ण रूप से स्वाधीन नहीं हो सकता, जब तक वह उधार ली हुई भाषा के स्थान पर अपनी भाषा को वरीयता नहीं देता। विश्व के अनेक देशों में हिंदी का शिक्षण, द्विभाषा शब्दकोश का निर्माण, शोध-कार्य आदि हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता और उपादेयता के उदाहरण हैं।

रबींद्रनाथ ठाकुर विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलाधिपति एवं विश्व रंग के निदेशक, श्री संतोष चौबे ने अपने संदेश में कहा कि हिंदी का विस्तार तभी होगा, जब हम अन्य भारतीय भाषाओं को भी साथ लेकर चलेंगे।

भारतीय उच्चायोग के प्रतिनिधि, कोंसलर, श्री नवीन गुलाटी ने इस बात पर बल दिया कि हिंदी में 'आर्टिफ़िशियल इंटेलीजेंस' तथा अन्य तकनीकी उपादानों के उपयोग से विश्व के कोने-कोने में हिंदी की पहुँच वैश्विक स्तर पर सुनिश्चित हो सकेगी।

शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के स्थायी सचिव, श्री युधिष्ठिर मनबोध ने बताया कि संस्कृति की रक्षा एवं पालन करने का व्यावहारिक मार्ग हिंदी भाषा है।

इस अवसर पर 'विश्व हिंदी साहित्य' के छठे संस्करण का लोकार्पण किया गया। यह अंक सचिवालय की वेबसाइट https://patrikayan.vishwahindi.com/ पर उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त, मोहनलाल बृजमोहन द्वारा रचित नाटक 'गूँज उठी थीं जब चहुँ दिशाएँ' तथा विश्व रंग द्वारा प्रकाशित 'विश्व में हिंदी' नामक पुस्तक का लोकार्पण किया गया।

विश्व के विभिन्न देशों से हिंदी-प्रेमियों ने वीडियो प्रस्तुति के माध्यम से विश्व हिंदी सचिवालय को 16वीं वर्षगाँठ की शुभकामनाएँ दीं।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

'अनंता नवरंग कला संघ' के कलाकार सर्वश्री अनिल दान्हू, श्री रविन्द्रनाथ रामदीन, श्री होमदत्त फॉली एवं श्रीमती शांता सुकन ने प्रेम जनमेजय द्वारा रचित 'हिंदी माथे की बिंदी' नामक लघु नाटक प्रस्तुत किया।

इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र तथा महात्मा गांधी संस्थान के कलाकारों द्वारा 'रसों का गुच्छा' नामक नृत्य नाटिका प्रस्तुत की गई।। इसका निर्देशन इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र की कथक नृत्य अध्यापिका सुश्री साधना नेगी ने किया तथा श्री पंकज प्रसाद नौटियाल ने इसे संगीतबद्ध किया। तबले पर डॉ. राजीव शुक्ला, की-बोर्ड पर यशीराज सन्मुखिया, सितार पर अरविंद भजन तथा वायलिन पर शविन बिदेसी तथा अन्य कलाकारों ने साथ दिया।

विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव डॉ. शुभंकर मिश्र द्वारा उपस्थित महानुभावों, गण्यमान्य

Newsletter WHS March 2024v3.indd 3 14/08/2025 16:12

अतिथियों, हिंदी प्रेमियों, शिक्षकों व छात्रों को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

एक दिवसीय कार्यशाला : पाठ, अनुवाद एवं निबंध विषय पर परिचर्चा

माध्यमिक पाठशाला की हिंदी अध्यापिका श्रीमती माधवी बिहारी एवं उनकी छात्राओं ने प्रसिद्ध कहानीकार मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित 'कफ़न' कहानी के अध्ययन-अध्यापन से संबंधित कठिनाइयों पर चर्चा की। शिक्षिका चित्रा दिरपोल और उनकी छात्राओं ने कविता की व्याख्या में होने वाली कठिनाइयों का उल्लेख किया। विषय-विशेषज्ञ डॉ. अरुणा अजितसरिया, एम.बी.ई. ने उपर्युक्त समस्याओं को उदाहरण के माध्यम से दूर करने का प्रयास किया। अंत में, उन्होंने कहानी-लेखन के बारे में विस्तार से बताया।

कार्यक्रम के समापन पर शिक्षिकाओं द्वारा संयुक्त रूप से डॉ. अरुणा अजितसरिया को एक प्रतीक-चिह्न प्रदान किया गया।

विश्व हिंदी सचिवालय के वरिष्ठ सहायक संपादक श्री प्रकाश वीर तथा आई.टी. अधिकारी श्री मनदीप सहारन ने सत्रों का मंच-संचालन किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

भारत में विश्व हिंदी दिवस 2024 का आयोजन

नागपुर

10 जनवरी, 2024 को नागपुर आंचलिक कार्यालय, बैंक ऑफ़ इंडिया में विश्व हिंदी दिवस समारोह का आयोजन हुआ। आंचलिक प्रबंधक श्री जय नारायण ने समारोह की अध्यक्षता की। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए उन्होंने सभी स्टाफ़ को हिंदी में कार्य करने का संकल्प लेने का प्रोत्साहन दिया। मुख्य प्रबंधक राजभाषा श्री राजीव कुमार ने अपने संबोधन में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन तथा हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार पर बात की। विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर बैंक द्वारा सेंट जोज़ेफ़ स्कूल, नागपुर में हिंदी भाषण प्रतियोगिता भी आयोजित हुई। इस अवसर पर बैंक से एक टीम को स्कूल में भेजा गया, ताकि प्रतियोगिता संपन्न हो सके।

साभार : बैंक ऑफ़ इंडिया की आधिकारिक वेबसाइट

बाजपुर, उत्तराखंड

10-19 जनवरी, 2024 को बुलंदी साहित्यिक सेवा समिति, बाजपुर, उत्तराखंड द्वारा विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर 'हिंदी की वैश्विक यात्रा बुलंदी पर हिंदी' नामक वर्च्युल कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें विश्व की 55 देशों से 1206 कवियों ने प्रतिभाग किया। इसे हॉवर्ड वर्ल्ड रिकॉर्ड (लंदन) द्वारा दुनिया के सबसे ज़्यादा देशों की सहभागिता सहित 220 घंटे अनवरत आयोजित होने वाले सबसे बड़े वर्चुअल कवि-सम्मेलन के रूप में विश्व रिकॉर्ड में सम्मिलित किया गया।

साभार : बुलंदी साहित्यिक सेवा समिति का फ़ेसबुक पेज

पटना

10 जनवरी, 2024 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन हुआ। समारोह की अध्यक्षता सम्मेलन अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने की। समारोह का उद्घाटन करते हुए, उपभोक्ता संरक्षण आयोग, बिहार के अध्यक्ष एवं पटना उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री संजय कुमार ने कहा कि भारत विविधताओं का देश है। यहाँ अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। किंतु सांस्कृतिक दृष्टि से हम सभी एक है। दूरदर्शन, बिहार के कार्यक्रम-प्रमुख डॉ. राज कुमार नाहर, सम्मेलन के उपाध्यक्ष डॉ. उपेंद्रनाथ पाण्डेय, डॉ. मधु वर्मा, पारिजात सौरभ, डॉ. सच्चिदानंद प्रेमी, डॉ. पूनम आनंद तथा आनंद किशोर मिश्र ने भी अपने उद्गार व्यक्त किए। इस अवसर पर 20 हिंदी सेवियों को 'हिंदी-रत्न' अलंकरण से विभूषित किया गया। विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में कवि-सम्मेलन का आयोजन भी किया गया।

साभार : बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन का फ़ेसबुक पेज

नई दिल्ली

10 जनवरी, 2024 को मेघदूत थिएटर परिसर, रवींद्र भवन, नई दिल्ली में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर संगीत नाटक अकादेमी, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 'भाषा एवं संस्कृति' विषयक संगोष्ठी एवं नाट्य प्रस्तुति आयोजित हुई। कार्यक्रम में संगीत नाटक अकादेमी की अध्यक्षा, डॉ. संध्या पुरेचा की गरिमामयी उपस्थिति रही। वक्ता के रूप में कवि एवं कला-मर्मज्ञ श्री प्रयाग शुक्ल, संस्कृतिकर्मी डॉ. राजेश कुमार व्यास, कला-मर्मज्ञ श्री विजय शंकर मिश्र तथा भाषाविद् डॉ. अनिल कुमार त्रिपाठी उपस्थित थे। सुंदर लाल छाबड़ा द्वारा निर्देशित, मुखामुखम, फ़रीदाबाद द्वारा हिंदी कहानीकार कामतानाथ की कहानी पर आधारित नाट्य-प्रस्तुति हुई।

साभार : संगीत नाटक अकादेमी का फ़ेसबुक पेज

वर्धा

10 जनवरी, 2024 को महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में भारत सरकार की महत्त्वाकांक्षी योजना 'विकसित भारत 2047' के अंतर्गत विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में 'वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने विषय-प्रवर्तन किया तथा प्रो. करुणाशंकर उपाध्याय, प्रो. के.एन. तिवारी, डॉ. राम प्रसाद भट्ट (जर्मनी), डॉ. सिरोजुद्दीन नुर्मातोव (उज़्बेकिस्तान), श्रीमती सुनीता नारायण (न्यूज़ीलैंड), ब्रज़िल नागाड बिथाना (श्रीलंका), प्रो. प्रीति सागर, डॉ. रामानुज अस्थाना एवं डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी ने वक्तव्य दिया। संगोष्ठी के संरक्षक विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. भीमराय मैत्री रहे।

साभार : महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय का फ़ेसबुक पेज

भोपाल

10 जनवरी, 2024 को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल द्वारा विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। भोपाल की शामला पहाड़ी पर 200 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय मानव तथा संस्कृति के विकास के इतिहास को अत्यंत विस्तार से प्रदर्शित करता है। इस संग्रहालय में भारत के विभिन्न राज्यों की जनजाति संस्कृति की झलक भी देखी जा सकती है। विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. जवाहर कर्नावट को आमंत्रित किया गया था। उन्होंने 'हिंदी का वैश्विक परिदृश्य' विषय पर वक्तव्य दिया। संग्रहालय के निदेशक प्रोफ़ेसर अमिताभ पांडे और प्रभारी अधिकारी श्री संजीव श्रीवास्तव द्वारा कार्यक्रम का सुंदर संयोजन हुआ।

साभार : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय का फ़ेसबुक पेज

हरिद्वार

10-11 जनवरी, 2024 को हिमालयीय विश्वविद्यालय, एम.एम.जे.एन.पी.जी. कॉलिज, हिमालय विरासत ट्रस्ट और लेखक गाँव के तत्त्वावधान में वैश्विक हिंदी परिवार द्वारा 'लेखक गाँव एवं विश्व हिंदी दिवस कार्यक्रम' का आयोजन हरिद्वार में किया गया। विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में तीर्थनगरी हरिद्वार से हिंदी को राष्ट्रभाषा और संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाने का अभियान शुरू हुआ। इस आयोजन के अध्यक्ष, पूर्व केंद्रीय शिक्षा मंत्री, सांसद डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक ने कहा कि हिंदी दुनिया की सर्वाधिक लोकप्रिय भाषाओं में से है। दुनिया के 250 से अधिक विश्वविद्यालयों व 600 महाविद्यालयों में पढ़ाई जाती है। पूरे विश्व ने हिंदी को स्वीकार किया, लेकिन देश में इसे राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं मिल सका। ब्रिटेन से दिव्या माथुर, कनाडा से शैलजा सक्सेना, अमेरिका से अनूप भार्गव, ब्रिटेन से जय वर्मा, लंदन से कृष्णा टंडन, जापान से रमा शर्मा, कनाडा से स्नेह ठाकुर, आयरलैंड से अभिषेक त्रिपाठी, रूस से इंद्रजीत सिंह, उज़्बेकिस्तान से उल्फ़त मुखीबोवा, वैश्विक हिंदी परिवार से कवि व लेखक अनिल जोशी व प्रतिष्ठित लेखिका डॉ. मधु चतुर्वेदी ने दो दिवसीय आयोजन में भाग लिया। संगोष्ठी के बाद सभी प्रतिभागियों ने हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाने का संकल्प लिया।

साभार : अमर उजाला / अविकल उत्तराखंड / यू.के. न्यूज़281.कॉम

विश्व भर में विश्व हिंदी दिवस 2024 का आयोजन

कराकास, वेनेज़ुएला

12 जनवरी, 2024 को कराकास स्थित भारतीय दूतावास द्वारा विश्व हिंदी दिवस का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में भारत मित्रों, अधिकारियों व उनके परिवारों तथा हिंदी के विद्यार्थियों ने कविता-पाठ किया। अपने संबोधन में राजदूत महोदय ने भारत की संस्कृति और विरासत के संरक्षण में हिंदी भाषा की अहम भूमिका पर बल दिया।

साभार : भारतीय दूतावास, कराकास, वेनेज़ुएला की वेबसाइट

गुआंगज़ू, चीन

29 मार्च, 2024 को भारतीय महावाणिज्य दूतावास, गुआंगज़ू ने अपने परिसर में विश्व हिंदी दिवस मनाया। कौंसल जनरल श्री शम्भू हक्की ने मुख्य भाषण दिया और दक्षिण चीन में हिंदी के प्रचार-प्रसार में भारतीय महावाणिज्य दूतावास, गुआंगज़ू द्वारा आयोजित की गई गतिविधियों पर प्रकाश डाला। ग्वांगडोंग यूनिवर्सिटी ऑफ़ फ़ॉरेन स्टडीज़ के हिंदी विभाग के चीनी छात्रों द्वारा हिंदी के मधुर गीतों और मनमोहक नृत्य की प्रस्तुति हुई। 6 वर्षीय कौस्तुभ त्यागी द्वारा हिंदी कविता 'हिंदी का सम्मान करो' का पठन किया गया। भारतीय प्रवासी श्रीमती नीरा त्यागी द्वारा मुंशी प्रेमचंद की हिंदी कविता 'ख्वाहिश' सुनाई गई तथा भारतीय प्रवासी श्रीमती ममता बारोट के गीतों ने कार्यक्रम में चार चाँद लगा दिए। ग्वांगडोंग यूनिवर्सिटी ऑफ़ फ़ॉरेन स्टडीज़, शेन्ज़ेन विश्वविद्यालय, युन्नान विश्वविद्यालय और युन्नान मिंज़ू विश्वविद्यालय जैसे चीनी विदेशी विश्वविद्यालयों के हिंदी/भारतीय अध्ययन विभाग के अध्यक्षों, शिक्षकों और छात्रों ने भाषण और सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। विश्व हिंदी दिवस 2024 के अवसर पर भारतीय महावाणिज्य दूतावास, गुआंगज़ू ने 'हिंदी आइडल गायन प्रतियोगिता' के फ़ाइनल का भी आयोजन किया। प्रतियोगिता के विजेताओं को कौंसल जनरल द्वारा पुरस्कृत किया गया। भारतीय महावाणिज्य दूतावास, गुआंगज़ू ने प्रवासी भारतीय बच्चों के लिए एक ऑनलाइन हिंदी निबंध-लेखन प्रतियोगिता आयोजित की। प्रतियोगिता का विषय था 'मैं 2047 में भारत का विकास कैसे करूँ?'। प्रतियोगिता के विजेताओं को कौंसल जनरल द्वारा पुरस्कृत किया गया।

साभार : भारतीय महावाणिज्य दूतावास, गुआंगज़ू का फ़ेसबुक पेज

न्यूज़ीलैंड

जनवरी 2024 में साउथलैंड हिंदी स्कूल, न्यूज़ीलैंड ने 'हमारी संस्कृति, हमारी विरासत और हमारे स्वतंत्रता सेनानी' विषय पर विश्व हिंदी दिवस मनाया। कार्यक्रम का उद्देश्य भारत के स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े महानायकों के योगदान को नई पीढ़ी तक पहुँचाना तथा हिंदी भाषा और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को सशक्त बनाना रहा। स्कूल के बच्चों ने भारत के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानियों की भूमिका निभाई। महात्मा गांधी, चंद्रशेखर आज़ाद, पंडित जवाहरलाल नेहरू, डॉ. भीमराव अंबेडकर और सुभाष चंद्र बोस जैसे ऐतिहासिक नेताओं का रूप धारण कर बच्चों ने मंच पर उनके योगदान को दर्शाया और उनके जीवन और कार्यों के बारे में बताया। स्कूल की बालिकाओं ने रानी लक्ष्मीबाई, रानी दुर्गावती और अहिल्याबाई होलकर जैसे प्रेरणादायक महिलाओं की वेशभूषा धारण कर

उनके योगदान को संक्षिप्त में प्रस्तुत किया। उन्होंने यह संदेश भी दिया कि 'नारी सशक्तिकरण' भारत की संस्कृति में नया नहीं है, बल्कि इसकी जड़ें अत्यंत गहरी हैं। संचालन शिक्षिका हेमा चंद्रा और प्रधानाध्यापिका हिमानी मिश्रा ने किया। उन्होंने बताया कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणाएँ आज भी प्रासंगिक हैं और दुनिया को शांति, सहनशीलता और न्याय की राह पर ले जाने में सहायक हो सकती हैं। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि बच्चों में इन मूल्यों को हिंदी भाषा के माध्यम से रोपित करना आवश्यक है। इस आयोजन ने बच्चों को न केवल हिंदी भाषा के अभ्यास का अवसर दिया, बल्कि उन्हें अपनी संस्कृति, इतिहास और मूल्यों से जोड़ने का अवसर भी प्रदान किया।

आभार : हिमानी मिश्रा, प्रधानाध्यापिका, साउथलैंड हिंदी स्कूल एवं अध्यक्ष, साउथलैंड माइग्रेंट वॉकिंग टुगेदर, न्यूज़ीलैंड

10 जनवरी, 2024 को भारतीय उच्चायोग, वेलिंग्टन, न्यूज़ीलैंड में विश्व हिंदी दिवस आयोजित किया गया। समारोह में विभिन्न गतिविधियाँ जैसे - हिंदी क्विज़, हिंदी कविता-पाठ और 'हिंदी को सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा कैसे बनाया जाए', 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' और 'भारत एक उभरती वैश्विक शक्ति' जैसे विषयों पर भाषण प्रस्तुत किए गए। प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

साभार : भारतीय उच्चायोग, वेलिंग्टन, न्यूज़ीलैंड का फ़ेसबुक पेज

बर्मिंघम

10 जनवरी, 2024 को भारतीय प्रधान कौंसुलावास, बर्मिंघम में विश्व हिंदी दिवस समारोह का आयोजन हुआ। इस अवसर पर कार्यवाहक कौंसुल जनरल श्री अमन बंसल ने सभी अतिथियों को संबोधित किया एवं प्रधानमंत्री का संदेश पढ़ा। कार्यक्रम के दौरान हिंदी प्रेमियों द्वारा भाषण दिए गए एवं कविताएँ पढ़ी गईं।

साभार : भारतीय प्रधान कौंसुलावास, बर्मिंघम की वेबसाइट

कोलंबो, श्री लंका

10 जनवरी, 2024 को भारतीय दूतावास, कोलंबो, श्री लंका में विश्व हिंदी दिवस 2024 पर दो दिवसीय कार्यक्रम आयोजित हुआ। भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री संतोष झा ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। मुख्य अतिथि शिक्षा मंत्री, माननीय श्री सुशील प्रेमजयंत रहे। श्रीलंका में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् द्वारा आयोजित समारोह में भारत और श्री लंका के लगभग 30 विश्वविद्यालयों, स्कूलों और संस्थानों के 200 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। उद्घाटन दीप-प्रज्वलन के साथ तथा पारंपरिक लोक नृत्य के साथ किया गया। महामहिम उच्चायुक्त ने अपने भाषण में विश्व स्तर पर हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता पर प्रकाश डाला। माननीय शिक्षा राज्य मंत्री, श्री ए. अरविंद कुमार ने दोनों देशों को जोड़ने में हिंदी की भूमिका पर प्रकाश डाला। अंत में, विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र भी वितरित किए गए।

साभार : भारतीय दूतावास, कोलंबो, श्री लंका का फ़ेसबुक पेज

सैन फ्रांसिस्को

12 जनवरी, 2024 को सैन फ्रांसिस्को स्थित भारतीय महावाणिज्य दूतावास ने उत्तर प्रदेश मंडल ऑफ़ अमेरिका (यूपीएमए ग्लोबल) और विश्व हिंदी ज्योति, कैलिफ़ोर्निया के सहयोग से मिलपिटास स्थित सिलिकॉन आंध्र विश्वविद्यालय में विश्व हिंदी दिवस मनाया। महावाणिज्य दूत, डॉ. श्रीकर रेड्डी ने सबका स्वागत करते हुए अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। प्रो. नीलू गुप्ता सहित भारतीय समुदाय के सदस्यों ने हिंदी कविताएँ, कीर्तन और भाषण प्रस्तुत किए।

साभार : भारतीय महावाणिज्य दूतावास, सैन फ्रांसिस्को की आधिकारिक वेबसाइट

सूरीनाम

10 जनवरी, 2024 को सूरीनाम हिंदी परिषद् तथा भारतीय दूतावास, पारामारिबो द्वारा विश्व हिंदी दिवस समारोह का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप-प्रज्ज्वलन एवं गणेश स्तुति के साथ हुआ। द्वितीय सचिव श्री प्रेम सेलवाल ने विश्व हिंदी दिवस पर भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के संदेश का वाचन किया। दूतावास में सांस्कृतिक अधिकारी अंजु शर्मा द्वारा राजदूत महोदय के विशेष संबोधन का वाचन किया गया, जिसमें राजदूत ने देश में भाषा को जीवित रखने में सूरीनाम के भारतवंशियों के योगदान की प्रशंसा की। उन्होंने अपने 'वंदे मातृभाषा' अभियान की व्यापक सफलता सुनिश्चित करने के लिए इसे एक सार्वजनिक आंदोलन के रूप में बदलने की आवश्यकता का उल्लेख किया। उन्होंने हिंदी को बढ़ावा देने के लिए अपने द्वारा की गई पहलों का भी उल्लेख किया, जिसमें भारतवंशियों द्वारा संचालित स्कूलों के साथ सीधे काम करने के लिए एक हिंदी-सह-संस्कृत विद्वान को प्रतिनियुक्त करने का प्रयास तथा सूरीनाम के भारतवंशियों द्वारा देवनागरी हिंदी में नाम बोर्ड प्रदर्शित करने की अपील सम्मिलित हैं। सूरीनाम हिंदी परिषद् के अध्यक्ष श्री सतजानंद प्रामसुख, शिक्षा मंत्रालय सूरीनाम की प्रतिनिधि श्रीमती रानी रामावतार, स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक डॉ. सोमवीर आर्य और सूरीनाम के सनातन धर्म महासभा के अध्यक्ष पं. नितिन जगबंधन ने सभा को संबोधित किया। सुश्री शुशांतानी रघुबीर एवं श्री शाम जानकी ने हिंदी कविता का पाठ किया तथा पायल की झंकार समूह द्वारा नृत्य प्रस्तुति की गई। हिंदी में निबंध-लेखन प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रमाण-पत्र और पुरस्कार प्रदान किए गए।

साभार : सूरीनाम हिंदी परिषद् का फ़ेसबुक पेज

लंदन

12 जनवरी, 2024 को भारतीय उच्चायोग, लंदन में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। उद्घाटन-भाषण में समन्वय मंत्री श्री दीपक चौधरी ने बताया कि लंदन में हिंदी दिवस का मनाया जाना और भारत में मनाये जाने में कोई ज़्यादा अंतर नहीं है, क्योंकि लंदन में हिंदी पढ़ने, लिखने और बोलने वालों की संख्या काफ़ी है। उन्होंने लंदन में हिंदी लेखन की गुणवत्ता तथा रुचि के बारे में भी उल्लेख किया। भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री विक्रम दोरेस्वामी ने सभी को विश्व हिंदी दिवस की शुभकामनाएँ दीं। इस उपलक्ष्य में 'भारत भवन' पुस्तक के 5वें अंक का लोकार्पण किया गया तथा मनोनीत हिंदी विद्वानों को 'यू.के. हिंदी सम्मान' से विभूषित किया गया। सम्मान समारोह के बाद काव्य-पाठ हुआ। अताशे हिंदी के पद पर कार्यरत डॉ. नंदिता साहू ने सफल संचालन किया।

साभार : भारतीय उच्चायोग, लंदन का फ़ेसबुक पेज

चेक गणराज्य, प्राग

10 जनवरी, 2024 को चेक गणराज्य, प्राग में भारतीय राजदूतवास में विश्व हिंदी दिवस का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर राजदूत महोदय ने दूतावास के सभी कर्मचारियों तथा अधिकारियों के सम्मुख प्रधान मंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी का संदेश प्रेषित किया।

साभार : भारतीय राजदूतवास, प्राग का फ़ेसबुक पेज

यांगोन, म्यांमार

10 जनवरी, 2024 को भारत के राजदूतावास, यांगोन ने स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र के सभागार में विश्व हिंदी दिवस समारोह मनाया। म्यांमार में भारत के राजदूत श्री विनय कुमार ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। डॉ. रामनिवास, श्री बृजेश वर्मा तथा श्री आशीष कंधवे मंच पर उपस्थित थे। राजदूत श्री विनय कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि वैश्विक पटल पर हिंदी अब स्थापित हो चुकी है। श्री आशीष कंधवे ने बताया कि हिंदी उपयोगकर्ताओं की दृष्टि से प्रथम स्थान पर पहुँचने वाली भाषा बन गई है। भारत के राजदूतावास द्वारा विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में कविता प्रतियोगिता, हिंदी गीत गायन प्रतियोगिता और सृजनात्मक लेखन पर कार्यशाला हुई तथा हिंदी-शिक्षण के क्षेत्र में विशेष योगदान देने वाले शिक्षकों को सम्मानित किया गया। 'हिंदी भाषा प्रयोगशाला' का उद्घाटन महामहिम राजदूत श्री विनय कुमार के कर कमलों द्वारा संपन्न हुआ। डॉ. रामनिवास तथा श्री बृजेश वर्मा ने 'म्यांमार में हिंदी की स्थिति तथा म्यांमार में हिंदी-शिक्षण की चुनौतियाँ' विषय पर अपने विचार प्रकट किए। 'नो इंडिया प्रोग्राम' में प्रतिभागिता करने वाले दो प्रतिभागियों को आमंत्रित किया गया था, जिन्होंने 21 दिन की अपनी भारत यात्रा के अनुभवों को साझा किया। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा, द्वारा आयोजित हिंदी परीक्षा में सफल छात्र–छात्राओं को राजदूत द्वारा प्रमाण-पत्र भी प्रदान किए गए।

साभार : श्री आशीष कंधवे का फ़ेसबुक पेज

आबु धाबी, यू.ए.ई.

13 जनवरी, 2024 को आबु धाबी के भारतीय विद्या भवन 'प्राइवेट इंटरनेशनल इंग्लिश स्कूल' द्वारा विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। इसे अंतरविद्यालयी विविध प्रतियोगिताओं के रूप में मनाकर, भावी पीढ़ी को हिंदी के प्रचार-प्रचार का उत्तरदायित्व सौंपा गया। प्रधानाचार्य श्री सुरेश बालाकृष्णन तथा हिंदी विभाग प्रमुख श्री रवि शुक्ल ने आयोजन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। मुख्य अतिथि श्री राजेंद्रन पद्मनाभन, प्रधानाचार्य, सनराइज़ इंटरनेशनल स्कूल रहे। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता विशिष्ट अतिथि डॉ. आरती लोकेश ने की। समापन-सामारोह की अध्यक्षता का दायित्व श्री आलोक शर्मा ने निभाया। प्रतिभागियों के मूल्यांकन हेतु निर्णायक मंडल में डॉ. उर्मिला चौधरी, श्रीमती मीरा ठाकुर, सुश्री अनु बाफ़ना, श्री शब्बीर हुसैन मुनव्वर, डॉ. मंजु सिंह, श्रीमती ऋचा मित्तल, डॉ. नितेश शाह व सुश्री दीपाली रहे। इस अद्भुत उच्चस्तरीय कार्यक्रम ने हिंदी का परचम फहराने, आतिथ्य-सत्कार व मान-सम्मान की पराकाष्ठा को अर्जित किया है।

साभार : डॉ. आरती 'लोकेश' का फ़ेसबुक पेज

कीव, यूक्रेन

10 जनवरी, 2024 को भारतीय राजदूतावास, कीव द्वारा दूतावास परिसर में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में तारास शेवचेंको विश्वविद्यालय एवं कीव राष्ट्रीय भाषाई विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों, शिक्षकों, छात्रों, भारतीय समुदाय के सदस्यों और यूक्रेन में हिंदी प्रेमियों ने भाग लिया। विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी कविता-पाठ एवं हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिताएँ हुई। विजेताओं को समारोह के दौरान पुरस्कार और प्रमाण-पत्र/भागीदारी-प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

साभार : भारतीय दूतावास, कीव, यूक्रेन का फ़ेसबुक पेज

अल्बर्टा, कनाडा

13 जनवरी, 2024 को अल्बर्टा हिंदी परिषद् और हिंदी स्कूल ने विश्व हिंदी दिवस बड़े धूमधाम से मनाया। कार्यक्रम का आरंभ बच्चों द्वारा एक सामूहिक गीत "मन को इतनी शक्ति देना" से हुआ। कार्यक्रम में बच्चे, युवा और वरिष्ठ सभी ने अपनी-अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं। कार्यक्रम में तुलसीदास

के दोहों का वाचन भी मधुर एवं सुरीले स्वर में किया गया। कार्यक्रम में हिंदी भाषा के इतिहास पर चर्चा हुई। प्रेसिडेंट अमित एरी, वाइस प्रेसिडेंट प्रोग्रामिंग अरुणा नायर, प्राध्यापिका अलकनंदा राय और अध्यापिका अंशु शोत्रिया और रमा शर्मा ने अपनी कक्षा के छात्रों और छात्राओं द्वारा निर्मित कार्यक्रम प्रस्तुत किए। 190 से भी ऊपर लोगों ने कार्यक्रम में भाग लिया और विशेष अतिथियों में पूर्व एम.एल.ए. श्री नरेश भारद्वाज, श्री राजीव रंजन, सी.आई.एस.ई. प्रेसिडेंट श्री पुनीत मनचंदा, श्री रवि प्रकाश व रश्मी सिन्हा उपस्थित थे। वी4यू रेडियो से मानसी अग्रवाल और हरदीप खत्री तथा कवयित्री सरला और वीना शर्मा ने स्वरचित कविताएँ पढ़ीं।

साभार : अल्बर्टा हिंदी परिषद् का फ़ेसबुक पेज

अम्मान, जॉर्डन

10 जनवरी, 2024 को भारतीय दूतावास, अम्मान, जॉर्डन में राजदूत महामहिम अनवर हलीम के नेतृत्व में विश्व हिंदी दिवस अति उत्साह के साथ मनाया गया। इस उपलक्ष्य में भारतीय दूतावास में हिंदी निबंध तथा काव्य-पाठ प्रतियोगिताएँ हुईं। इसमें जॉर्डन में स्थित समस्त भारतीय समुदाय, दूतावास के अधिकारियों तथा कर्मचारियों एवं मित्रगण ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। सभी प्रतिभागियों को भारतीय राजदूत महामहिम अनवर हलीम द्वारा प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

साभार : भारतीय दूतावास, अम्मान, जॉर्डन का फ़ेसबुक पेज

फ़िजी

13 जनवरी, 2024 को सुवा, फ़िजी में भारतीय उच्चायोग, सुवा, स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् तथा झंकार संगीत अकादमी, नांदी द्वारा विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। साथ ही, गायत्री बाल विकास, लम्बासा के तत्त्वावधान में हिंदी कार्यशाला लगी, जिसमें 30 बच्चों ने भाग लिया। कार्यशाला में बच्चों को हिंदी वर्णमाला का ज्ञान कराया गया तथा हिंदी सीखने की विधियों के बारे में बताया गया। कार्यशाला के उपरांत हिंदी सीखने वाले बच्चों को प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया। विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में 'फ़िजी में 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन का प्रभाव' विषय पर निबंध-लेखन प्रतियोगिता हुई। प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर आए प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया तथा 4 सांत्वना पुरस्कार भी प्रदान किए गए। इस अवसर पर कवि-सम्मेलन भी हुआ।

साभार : भारतीय उच्चायोग, सुवा, फ़िजी का फ़ेसबुक पेज

कनाडा

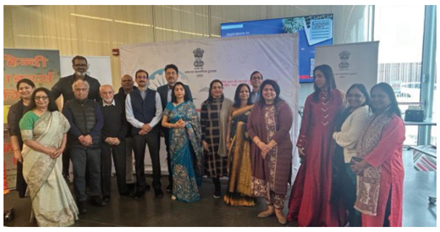

20 जनवरी, 2024 को हिंदी राइटर्स गिल्ड कनाडा और टोरंटो में भारतीय कौंसलावास द्वारा ब्रैम्पटन लाइब्रेरी (स्प्रिंगडेल ब्रांच) में विश्व हिंदी दिवस समारोह आयोजित हुआ। कार्यक्रम का आरंभ सरस्वती वंदना से हुआ। इसके मुख्य अतिथि श्री सिद्धनाथ, कौंसलर, भारतीय कौंसलावास, कनाडा रहे। 51 बच्चों ने कविता-प्रस्तुति की और कौंसलर द्वारा प्रमाण-पत्र देकर उनको सम्मानित किया गया। इसमें बड़ी संख्या में बाल कलाकारों तथा युवा कवियों ने भाग लिया। कुछ युवा कवियों ने आभासी रूप से भी अपनी प्रस्तुति दी।

साभार : हिंदी राटर्स गिल्ड, कैनेडा का फ़ेसबुक पेज

सेशेल्स

10 जनवरी, 2024 को भारतीय उच्चायोग, सेशेल्स द्वारा विश्व हिंदी दिवस कार्यक्रम आयोजित हुआ। भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री कार्तिक पांडे ने अपने संबोधन में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने की बात की और विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री जी के संदेश का वाचन किया। इस उपलक्ष्य में हिंदी निबंध-लेखन, कविता-पाठ और हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई थीं। प्रतियोगिता के विजेताओं को नकद पुरस्कार तथा अन्य प्रतिभागियों को प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए गए।

साभार : भारतीय उच्चायोग, सेशेल्स का फ़ेसबुक पेज

बुडापेस्ट, हंगरी

10 जनवरी, 2024 को भारतीय दूतावास, बुडापेस्ट, हंगरी तथा अमृता शेरगिल सांस्कृतिक केंद्र द्वारा विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। इसमें बच्चों को हिंदी और भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने में उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया। समारोह में हिंदी छात्रों द्वारा हिंदी कविता और गीत प्रस्तुत किए गए और कथक नृत्य की प्रस्तुति हुई। समारोह में हंगरी के भारतीय समाज के सदस्यों तथा भारतीय अध्ययन विभाग, एल्ते विश्वविद्यालय के छात्रों ने भाग लिया।

साभार : भारतीय दूतावास, बुडापेस्ट, हंगरी का फ़ेसबुक पेज

जापान

10 जनवरी, 2024 को जापान में भारतीय दूतावास द्वारा उत्साह और उमंग के साथ विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। राजदूत महामहिम सिबी जॉर्ज ने उद्घाटन भाषण दिया और भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी का संदेश पढ़ा। जापान के प्रसिद्ध हिंदी विद्वानों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया और ग्लोबल इंडियन इंटरनेशनल स्कूल

Newsletter WHS March 2024v3.indd 8 14/08/2025 16:12

(जीआईआईएस) के छात्रों ने महान कवि और नाटककार भारतेंदु हरिश्चंद्र के जीवन, कार्यों और कविताओं पर प्रस्तुति की तथा हिंदी के महत्त्व पर नुक्कड़ नाटक प्रदर्शित किया।

साभार : भारतीय दूतावास, तोक्यो, जापान का फ़ेसबुक पेज

5 फ़रवरी, 2024 को ओसाका विश्वविद्यालय तथा भारत के प्रधान कौंसलावास, ओसाका-कोबे के संयुक्त तत्त्वावधान में ओसाका विश्वविद्यालय में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन हुआ। इस अवसर पर जापान में भारत के प्रधान कौंसल, श्री निखिलेश गिरि, डॉ. जवाहर कर्नावट, प्रो. श्यामसुंदर पाण्डेय, प्रो. एमेरिटस तोमिओ मिज़ोकामी का वक्तव्य हुआ। 'जापान में हिंदी शिक्षण के कुछ अनुभव' विषय पर डॉ. अकिरा ताकाहाशी और डॉ. हरजेंद्र चौधरी की संक्षिप्त बातचीत हुई। प्रो. तोमिओ मिज़ोकामि की पुस्तक 'तोमिओ मिज़ोकामि : व्यक्तित्व और रचना-समग्र' का लोकार्पण भी किया गया।

साभार : भारत के प्रधान कौंसलावास, ओसाका, जापान का फ़ेसबुक पेज

सम्मेलन, संगोष्ठी, परिचर्चा, जयंती

जापान में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

2-4 फ़रवरी, 2024 को जापान में विदेश मंत्रालय और तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ़ फ़ॉरेन स्टडीज़ तथा भारतीय राजदूतावास, तोक्यो के संयुक्त तत्त्वावधान में एक अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन का विषय 'दक्षिण पूर्व एशिया में हिंदी की स्थिति' रखा गया था। सम्मेलन का उद्घाटन भारत के राजदूत महामहिम श्री सिबी जॉर्ज के भाषण से हुआ। प्रो. कायाको हयाशी, अध्यक्ष, तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ़ फ़ॉरेन स्टडीज़ (टीयूएफ़एस) तथा हिंदी विभाग के प्रमुख, प्रो. योशिफ़ुमी मिज़ुनो ने सभागार को संबोधित किया। उद्घाटन सत्र के दौरान जापानी विद्वानों का अभिनंदन और सम्मेलन स्मारिका व अन्य पुस्तकों का विमोचन किया गया। हिंदी काव्य गोष्ठी एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी रखे गए। इंडिया इंटरनेशनल स्कूल, जापान के छात्रों द्वारा हिंदी नाटक और सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति हुई। 3 एवं 4 फ़रवरी को आयोजित विभिन्न सत्रों में भारत एवं अन्य देशों के हिंदी विद्वानों ने वक्तव्य प्रस्तुत किए। समारोह में भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के संयुक्त सचिव (आरबीबी) श्री रवींद्र जयसवाल, मिशन के डिप्टी चीफ़ श्री मयंक जोशी, जापान, भारत एवं अन्य देशों के प्रसिद्ध हिंदी विद्वान एवं छात्र उपस्थित थे।

साभार : भारतीय राजदूतावास, तोक्यो का फ़ेसबुक पेज

नारनौल में 'अंतर्राष्ट्रीय नागरी लिपि सम्मेलन' का आयोजन

17 मार्च, 2024 को मनुमुक्त मानव मेमोरियल ट्रस्ट, नारनौल द्वारा रविवार को मनुमुक्त भवन में 'अंतर्राष्ट्रीय नागरी लिपि सम्मेलन' का आयोजन हुआ। इसमें भारत, नेपाल, थाईलैंड, ऑस्ट्रेलिया, नीदरलैंड, कोस्टा रिका और कनाडा सहित सात देशों के लगभग दो दर्जन विद्वानों ने सहभागिता की। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ में हिंदी विभाग के प्रोफ़ेसर व अध्यक्ष, डॉ. बीरपाल सिंह यादव और राजकीय महिला महाविद्यालय अलवर (राजस्थान) के प्राचार्य डॉ. अनूप सिंह ने नागरी लिपि के स्वरूप और स्थिति पर प्रकाश डाला। इस दौरान नागरी लिपि पर केंद्रित दोहे भी प्रस्तुत किए गए। समारोह में डॉ. सुनील भारद्वाज, हरीश प्रसाद जोशी आदि उपस्थित रहे। हिंदी भाषा, साहित्य और नागरी लिपि के विकास में उल्लेखनीय योगदान के लिए विभिन्न देशों के विद्वानों को सम्मानित किया गया। डॉ. सुनील भारद्वाज द्वारा प्रस्तुत प्रार्थना-गीत के उपरांत 'साझा संसार' वैश्विक साहित्य-मंच, विलनिस (नीदरलैंड्स) के संस्थापक और वरिष्ठ साहित्यकार, डॉ. रामा तक्षक की अध्यक्षता में आयोजित इस सम्मेलन में केंद्रीय हिंदी निदेशालय और तकनीकी शब्दावली आयोग, भारत सरकार, नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष प्रो. अवनीश कुमार मुख्य अतिथि थे। सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (राजस्थान) के कुलपति डॉ. उमाशंकर यादव और नागरी लिपि परिषद्, नई दिल्ली के कार्यकारी अध्यक्ष तथा अहमदनगर (महाराष्ट्र) के प्रमुख शिक्षाविद् डॉ. शहाबुद्दीन शेख, विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

इस अवसर पर नागरी लिपि को विश्व की सर्वश्रेष्ठ और सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि बताते हुए प्रो. अवनीश कुमार ने कहा कि नागरी लिपि कंप्यूटर युग के भी सर्वथा अनुरूप है। अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. रामा तक्षक ने कहा कि राजभाषा हिंदी की लिपि होने के कारण नागरी को राजलिपि का दर्जा प्राप्त है। डॉ. उमाशंकर यादव और डॉ. शहाबुद्दीन शेख ने नागरी लिपि के स्वरूप, स्थिति और महत्त्व पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि देश की लिपि-विहीन बोलियों के लिए नागरी सर्वोत्तम लिपि हो सकती है तथा इसमें विश्व-लिपि बनने की भी पूरी क्षमता है। इससे पूर्व विषय-प्रवर्तन करते हुए चीफ़ ट्रस्टी, डॉ. रामनिवास 'मानव' ने कहा कि नागरी लिपि को संपर्क लिपि के रूप में स्वीकार कर लिया जाए, तो यह राष्ट्रीय एकता में भी बड़ी सहायक सिद्ध हो सकती है। उन्होंने नागरी लिपि पर केंद्रित दोहा-पाठ भी किया। इससे पूर्व आयोजित वर्चुअल सत्र में काठमांडू (नेपाल) की डॉ. श्वेता दीप्ति, सिंगापुर सिटी (सिंगापुर) की डॉ. संध्या सिंह, सिडनी (ऑस्ट्रेलिया) की डॉ. भावना कुंअर, ऑकलैंड (न्यूजीलैंड) के रोहित कुमार 'हैप्पी', मॉरीशस के डॉ. कृष्णकुमार झा, पोर्ट ऑफ़ स्पेन (ट्रिनिडाड) के डॉ. शिवकुमार निगम, वाशिंगटन डीसी (अमेरिका) की डॉ. एस अनुकृति और टोरंटो (कनाडा) की डॉ. शैलजा सक्सेना ने भी नागरी लिपि के स्वरूप और स्थिति पर विस्तृत चर्चा करते हुए इसके महत्त्व और प्रासंगिकता को रेखांकित किया। श्री संजय पाठक (अलवर), डॉ. कृष्णा आर्य, डॉ. महीपाल सिंह, भूपसिंह भारती, स्वतंत्र विपुल (नारनौल) आदि कवियों ने काव्य-पाठ किया। अंत में, ट्रस्ट द्वारा अंगवस्त्र, सम्मान-पत्र और स्मृति-चिह्न भेंट कर विद्वानों को सम्मानित किया गया।

साभार : अमर उजाला एवं आवाज़ न्यूज़

एक दिवसीय भारतीय भाषा सम्मेलन

16 मार्च, 2024 को दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, जन संचार एवं मीडिया विभाग, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास एवं भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त

तत्त्वावधान में एक दिवसीय भारतीय भाषा सम्मेलन सम्पन्न हुआ। ऐसे सम्मेलन देश के सभी भागों में आयोजित किए गए। केन्द्रीय विश्वविद्यालयों की इसमें प्रमुख भूमिका है। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में श्री अनिल जोशी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने 'भारतीय भाषा और जीवन शैली' विषय पर वक्तव्य दिया। कार्यक्रम का संयोजन भारतीय भाषा समिति की ओर से श्री चंदन श्रीवास्तव और विश्वविद्यालय की ओर से श्री अताश पाराशर ने किया। इस अवसर पर शांति निकेतन के मीडिया विभाग के प्रमुख श्री विप्लव और मोतिहारी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग के प्रमुख श्री राजीव के भी व्याख्यान हुए। कार्यक्रम में विद्यार्थियों के शोध प्रबंध भी पढ़े गए।

साभार : वैश्विक हिंदी परिवार का फ़ेसबुक पेज

बेंगलूरु में प्रवासी भारतीय दिवस सम्पन्न

12 जनवरी, 2024 को अलायंस विश्वविद्यालय, बेंगलूरु में सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस के तहत भारतीय ज्ञान प्रणाली द्वारा प्रवासी भारतीय दिवस के अवसर पर दुनिया भर में प्रवासी भारतीयों के योगदान व उपलब्धियों को उजागर करने के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। इसका विषय 'भारतीय डायस्पोरा की चुनौतियाँ और उपलब्धियाँ' रखा गया था। मुख्य अतिथि डॉ. तोमियो मिज़ोकामी, जापानी लेखक व प्रोफ़ेसर एमेरिटस, ओसाका विश्वविद्यालय, जापान रहे। अपने वक्तव्य में उन्होंने बताया कि भारत और जापान का संबंध पुरातन है। वे हिंदी में बोलने में गर्व की अनुभूति करते हैं। डॉ. अनुराधा चौधरी, प्रो. आई.आई.टी., खड़गपुर और भारतीय ज्ञान प्रणाली, भारत की समन्वयक ने भारतीय ज्ञान प्रणाली की महत्ता पर विशेष प्रकाश डाला। डॉ. इला प्रसाद, प्रोफ़ेसर भौतिकी, सेंट थॉमस विश्वविद्यालय, ह्यूस्टन, अमेरिका ने पाश्चात्य और भारतीय ज्ञान प्रणाली के बीच संबंध पर अपनी बात रखी। डॉ. आरती 'लोकेश', हेडमिस्ट्रेस, वाइज़ इंडियन अकादमी, यू.ए.ई. ने स्वरचित कविताओं के माध्यम से अपनी बात रखी। डॉ. विवेक कुमार शुक्ला, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, आरहूस विश्वविद्यालय, डेनमार्क ने भाषा-शिक्षण की चुनौतियों पर प्रकाश डालते हुए प्रवासी भारतीयों के योगदान पर बेबाकी से अपने विचार व्यक्त किए।

साभार : हिन्द सागर, दैनिक हिंदी समाचार पत्र

नई दिल्ली में 'लेखक से संवाद' संगोष्ठी

26 फ़रवरी, 2024 को हिंदी साहित्य सभा एवं आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ के तत्त्वावधान में सत्यवती कॉलिज (सांध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय में भाषा संदर्भित महत्त्वपूर्ण संगोष्ठी 'लेखक से संवाद' का आयोजन हुआ। इसमें वैज्ञानिक एवं साहित्यकार, प्रो. पवन माथुर और वरिष्ठ व्यंग्यकार व हिंदी सेवी, डॉ. हरीश नवल वक्ता थे।

प्रो. माथुर ने वैज्ञानिक चिंतन के आधार पर काव्य में अर्थ-अभिप्राय कोड-डिकोडिंग को आधार बनाया। श्री हरीश नवल ने भाषा-विज्ञान का साक्ष्य देते हुए प्रतीक और ध्वनि से गूढ़ार्थ तक पहुँचने की बात की। विद्यार्थियों ने इस विषय में काफ़ी रुचि ली और परिसंवाद हुआ। चर्चा में प्राध्यापकों ने भी भाग लिया। तत्पश्चात् प्रो. पवन माथुर ने कविता और श्री हरीश नवल ने व्यंग्य-पाठ किया। प्रिंसिपल प्रो. हरींद्र कुमार और हिंदी विभाग के प्राध्यापक ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। संयोजन डॉ. मनोरमा मिश्रा ने किया।

साभार : डॉ. हरीश नवल का फ़ेसबुक पेज

सिंगापुर में अंतर्राष्ट्रीय साहित्यिक परिचर्चा तथा सम्मान समारोह

20 जनवरी, 2024 को डी.ए.वी. हिंदी स्कूल, सिंगापुर, संगम सिंगापुर असोसिएशन तथा हिंदी अकादमी, मुंबई के संयुक्त तत्त्वावधान में डी.ए.वी. हिंदी स्कूल, सिंगापुर में 'अंतर्राष्ट्रीय साहित्यिक परिचर्चा तथा सम्मान समारोह' आयोजित हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि चांसरी प्रमुख, भारतीय उच्चायोग सिंगापुर, श्री शिवजी तिवारी रहे। संयोजक, डॉ. संध्या सिंह, अध्यक्ष, संगम सिंगापुर असोसिएशन तथा आयोजक डॉ. प्रमोद पाण्डेय, अध्यक्ष, हिंदी अकादमी, मुंबई, भारत रहे। मेज़बानी श्री ओम प्रकाश राय, अध्यक्ष, डी.ए.वी. हिंदी स्कूल, सिंगापुर ने की। इस आयोजन का प्रमुख उद्देश्य साहित्य के माध्यम से सिंगापुर और भारत के बीच भाषा, साहित्य व सांस्कृतिक सेतु का निर्माण करना रहा। डॉ. संध्या सिंह ने अपने वक्तव्य में बताया कि इस कार्यक्रम से न सिर्फ़ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भाषा, साहित्य एवं संस्कृति का आदान-प्रदान होगा, अपितु दो देशों के बीच साहित्य के माध्यम से आपसी संबंध भी मज़बूत होंगे। डॉ. प्रमोद पांडेय के अनुसार *"साहित्य के माध्यम से दो देशों के बीच रिश्तों को और मज़बूत बनाना है तथा प्रवासी एवं भारतीय रचनाकारों को एक साथ एक मंच पर लेकर आना है।"* समारोह में डॉ. बालकृष्ण महाजन एवं डॉ. कृष्णकुमार द्विवेदी को 'अंतर्राष्ट्रीय गौरव भूषण पुरस्कार - 2024' से सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि के करकमलों द्वारा उनको शाल, स्मृति चिह्न और प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया। तत्पश्चात् हिंदी काव्य-सम्मेलन हुआ।

साभार : ज़ीरो माइल

ऑस्ट्रेलिया में इलासा द्वारा आयोजित हिंदी की गतिविधियाँ

ऑस्ट्रेलिया में हिंदी भाषा और साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित संस्था इंडियन लिटरेरी एंड आर्ट सोसाइटी ऑफ़ ऑस्ट्रेलिया (इलासा) अनेक वर्षों से विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करती रही है। संस्था की संस्थापिका और निदेशक, वरिष्ठ साहित्यकार सुश्री रेखा राजवंशी ने 2010 में संस्था को स्थापित किया था। हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए संस्था निरंतर कार्य करती रही है। भारत और ऑस्ट्रेलिया के साहित्यकारों के मध्य वैचारिक आदान-प्रदान और वार्तालाप संभव हो और अगली पीढ़ी अपनी भाषा और संस्कृति से परिचित हो सके, यही संस्था का उद्देश्य है।

7 जनवरी, 2024 को संस्था ने विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में साहित्यिक गोष्ठी आयोजित की। इसमें भारत से पधारे साहित्यकारों के साथ चर्चा तथा 'हिंदी को कैसे सुगम बनाया जाए' विषय पर विचार-विनिमय हुआ।

Newsletter WHS March 2024v3.indd 10 14/08/2025 16:12

14 जनवरी, 2024 को विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में इलासा ने मेलबर्न की संस्था 'साहित्य संध्या' के सहयोग से "ऑस्ट्रेलिया में हिंदी : संभावनाएँ और चुनौतियाँ - क्या कहते हैं भारत के साहित्यकार?" विषय पर आभासी कार्यक्रम का आयोजन किया।

आभार : सुश्री रेखा राजवंशी

साहित्य अकादमी का वार्षिक साहित्योत्सव

11 से 16 मार्च, 2024 तक साहित्य अकादमी तथा संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा विश्व का सबसे बड़ा साहित्योत्सव आयोजित किया गया। साहित्य अकादमी की स्थापना के 70 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में अकादमी द्वारा हर वर्ष मनाया जाने वाला 'साहित्योत्सव' इस बार विश्व के सबसे बड़े साहित्यिक उत्सव के रूप में मनाया गया। इसके अंतर्गत 190 से अधिक सत्रों में1100 से अधिक प्रसिद्ध लेखकों और विद्वानों ने भाग लिया। इसमें देश की 175 से अधिक भाषाओं का भी प्रतिनिधित्व रहा। समारोह का उद्घाटन केंद्रीय संस्कृति राज्य मंत्री माननीय श्री अर्जुन राम मेघवाल ने किया।

साहित्योत्सव के दूसरे दिन 24 भारतीय भाषाओं के लेखकों को पुरस्कृत किया गया। इनमें हिंदी भाषा के लिए 'मुझे पहचानो' उपन्यास हेतु कथाकार संजीव को सम्मानित किया गया। पुरस्कार समारोह के बाद रवींद्रनाथ ठाकुर की कविताओं का 'कस्तूरी' शीर्षक से एक प्रस्तुति हुई।

समारोह का एक बड़ा आकर्षण प्रख्यात लेखक व गीतकार गुलज़ार द्वारा 'सिनेमा और साहित्य' विषय पर संवत्सर व्याख्यान रहा। साहित्योत्सव में कला संस्कृति पर भी कई कार्यक्रम रखे गए तथा रंगमंच और साहित्य से जुड़े विषयों पर वक्तव्य हुए। संगीतमय कार्यक्रम तथा नाटक मंचन भी हुए।

साहित्योत्सव में बहुभाषी कवि-सम्मेलन, कहानी-पाठ, नारी शक्ति, आदिवासी कवि लेखक सम्मेलन, भारत में बाल साहित्य, भारत में नाट्य लेखन, भारत की सांस्कृतिक विरासत, भारतीय भाषाओं में विज्ञान कथा साहित्य, भविष्य के उपन्यास, भारतीय साहित्य में आत्मकथाएँ, विदेशों में भारतीय साहित्य, भारत की अवधारणा, साहित्य और सामाजिक आंदोलन, मीडिया और साहित्य, विविधता में एकता, भारतीय गौरव ग्रंथ तथा विश्व साहित्य, भारत का धार्मिक और दार्शनिक साहित्य, कविता का भविष्य, नैतिकता और साहित्य जैसे विषयों पर पैनल चर्चा और संगोष्ठियाँ आयोजित हुईं। बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता, साहित्य प्रश्नोतरी और कई अन्य प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव बताते हैं - *"विश्व के सबसे बड़े साहित्योत्सव का आयोजन कर हम निश्चय ही प्रसन्न हैं, उत्साहित हैं। हालाँकि हम इस आयोजन से गिनीज़ बुक में अपना नाम शामिल करने का कोई प्रयास नहीं कर रहे हैं। प्रयास बस इतना है कि देश भर के साहित्यकार एक ही मंच पर एकत्र हो सकें, मिल सकें चर्चा कर सकें। साथ ही, हमारा यह आयोजन अच्छे से सफल हो सके।"*

साभार : पुनर्वास / संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की औपचारिक वेबसाइट / युगवार्ता, पाक्षिक पत्रिका अंक 16-31 मार्च 2024

साहित्य अकादमी द्वारा 'प्रवासी मंच' कार्यक्रम का आयोजन

26 फ़रवरी, 2024 को साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के प्रतिष्ठित 'प्रवासी मंच' कार्यक्रम में कनाडा से पधारी हिंदी साहित्यकार, श्रीमती शैलजा सक्सेना ने अपनी रचनाओं का पाठ किया। उन्होंने पहले अपनी कविताएँ सुनाईं और उसके बाद अपनी कहानी 'लेबनॉन की एक रात' का एक अंश प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने खंड काव्य 'भीष्म' के भी कुछ अंश प्रस्तुत किए। उनकी कविताओं के शीर्षक थे - 'कनाडा में सुबह', 'ख़ुशफ़हमियाँ', 'मैं कहीं भी रहूँ', 'विदेश में रहती हैं', 'पेड़ यह' और 'इंद्रधनुष'। उन्होंने अपनी कविताओं का समापन 'माँ' पर लिखी एक कविता से किया। इन सभी कविताओं में जहाँ प्रवासी जीवन के संघर्ष थे, वहीं एक स्त्री होने के नाते इन संघर्षों की संवेदना का स्तर भी अलग था। रचना-पाठ के बाद उन्होंने उपस्थित श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर भी दिए। उन्होंने एक प्रश्न के उत्तर में बताया कि कोविड के बाद ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म पर कार्यक्रमों और संवाद की बढ़ोत्तरी के कारण एक-दूसरे को समझने के नए आयाम खुले हैं। उन्होंने नाटकों और अन्य विषयों के लेखन और प्रस्तुति की बढ़ोत्तरी की ओर इशारा करते हुए बताया कि अब प्रवासी रचना-संसार भी कहानी, कविताओं के अलावा नई-नई विधाओं में पंख पसार रहा है। प्रवासी एवं भारतीय साहित्य की दूरियाँ भी अब कम हुई हैं।

साभार : हिंदी राइटर्स गिल्ड कनाडा का फ़ेसबुक पेज

पटना में कवि निराला की जयंती पर समारोह और वसंतोत्सव - कवि-सम्मेलन

14 फ़रवरी, 2024 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन, पटना में महाप्राण पं. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की जयंती पर समारोह और वसंतोत्सव - कवि-सम्मेलन आयोजित किया गया। अध्यक्षता करते हुए, सम्मेलन अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने कहा "निराला ही व्यक्तित्व था महाप्राण 'निराला' का। वे हिंदी-काव्य-नभ के सर्वाधिक प्रखर भास्कर थे। छायावादीकाल के चार प्रमुख-स्तम्भों में उनका व्यक्तित्व श्रेष्ठ और विराट था। छंद पर अधिकार और विशेष आग्रह रखने वाले इस महाकवि ने जब आवश्यक समझा, तब छंद के बंधनों को तोड़ा भी, किंतु छंद को कभी छोड़ा भी नहीं।" उद्योग विभाग में विशेष सचिव और वरिष्ठ साहित्यकार दिलीप कुमार, भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त अधिकारी और वरिष्ठ कवि बच्चा ठाकुर, आनन्द किशोर मिश्र, श्री अवध किशोर सिंह तथा प्रो. सुशील कुमार ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर आयोजित वसंतोत्सव - कवि-सम्मेलन का आरंभ चंदा मिश्र ने वाणी-वंदना से किया। उपस्थित कवियों और कवयित्रियों ने अपनी रचनाओं से वसंत का स्वागत किया और श्रृंगार के पुष्प से 'मदन' का अभिषेक

किया। मंच संचालन कवि ब्रह्मानन्द ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन कृष्णरंजन सिंह ने किया।

डॉ. अनिल सुलभ की रिपोर्ट

कज़ाकिस्तान में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

13-14 मार्च, 2024 को कज़ाकिस्तान के अल्माटी शहर में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन संपन्न हुआ। अल-फ़राबी कज़ाख राष्ट्रीय विश्वविद्यालय एवं स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, भारतीय उच्चायोग, कज़ाकिस्तान द्वारा आयोजित 'यूरेशिया और भारत में हिंदी का वर्तमान और भविष्य' विषय पर यह पहला अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रीय वैज्ञानिक-व्यावहारिक हिंदी सम्मेलन है, जो विश्वविद्यालय की 90वीं वर्षगाँठ और प्राच्य अध्ययन संकाय के हिंदी विभाग की 25वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में हुआ। माननीय डॉ. टी.वी. नागेंद्र प्रसाद, महामहिम भारतीय राजदूत, कज़ाकिस्तान, श्री रविकांत, निदेशक, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, दोसोवा सेनिमगुल नौरिजबाएवना, कज़ाकिस्तान, प्रो. सुनील कुलकर्णी, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा द्वारा सम्मेलन का उद्घाटन हुआ। डॉ. सरिता शुक्ला ने 'हिंदी में विज्ञान लेखन की समस्याओं' विषय पर वक्तव्य दिया और उनके निवारण का उपाय बताया। डॉ. मेनका त्रिपाठी ने 'हिंदी भाषाविज्ञान का सामाजिक संदर्भ' विषय पर वक्तव्य में भाषाविज्ञान की व्यावहारिक समस्या पर बात की। प्रो. बलराम गुप्ता ने 'हिंदी भाषा के ऐतिहासिक संपर्क' विषय पर वक्तव्य दिया। अन्य सभी विद्वानों ने भी अपने-अपने विषय से संबंधित आलेख प्रस्तुत किए। सम्मेलन में पुस्तकों का लोकार्पण भी हुआ। इसमें भारत और कज़ाकिस्तान के अतिरिक्त उज़्बेकिस्तान, ताजिकिस्तान, रूस, बेलारूस, अज़रबैजान, आरमेनिया आदि देशों के प्रतिभागी उपस्थित रहे।

साभार : दैनिक बोलता शब्द - महात्मा गांधी केंद्र, अल्माटी का फ़ेसबुक पेज/ डॉ. अमित कुमार गुप्ता की रिपोर्ट

इंदौर में वैश्विक हिंदी संगोष्ठी

19 जनवरी, 2024 को वैश्विक हिंदी सम्मेलन, भारतीय भाषा मंच और इंदौर प्रेस क्लब के संयुक्त तत्त्वावधन में 'भारत और भारतीय भाषाएँ' विषय पर वैश्विक हिंदी संगोष्ठी का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति जरतकुमार जैन, न्यायाधीश म.प्र. उच्च न्यायालय (से.नि.), अध्यक्ष, श्री ए. विनोद केरल, सहसंयोजक, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, अतिथि विशेष पुष्यमित्र भार्गव, महापौर, नगरपालिका निगम, इंदौर रहे। डॉ. मोतीलाल गुप्ता आदित्य, निदेशक, वैश्विक हिंदी सम्मेलन ने विषय-प्रवर्तन किया। संगोष्ठी में डॉ. मनोहर भंडारी, वरिष्ठ चिकित्सक, अनिल त्रिवेदी, अभिभाषक, सरोजकुमार, साहित्यकार निर्मलकुमार पाटोदी, हिंदी सेवी को सम्मानित किया गया। प्रो. विनोद कुमार मिश्र, श्री अनिल जोशी एवं श्री अरविंद जवलेकर ने भी संगोष्ठी में भाग लिया। संगोष्ठी में भारत नाम तथा शिक्षा, साहित्य, न्याय, प्रशासन, मीडिया आदि में भारतीय भाषाओं के प्रतिष्ठापन पर विचार-विमर्श हुआ।

आभार : श्री राजेश जैन दद्दू

आभासी कार्यक्रम
हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि

6 जनवरी, 2024 को विश्व हिंदी सचिवालय ने आभासी कार्यक्रम **'हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि - भाग 9 : संदर्भ - लोक-साहित्य'** का आयोजन किया। विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने सभी विद्वानों एवं प्रतिभागियों का औपचारिक स्वागत किया। श्री विमलेश कांति वर्मा ने हिंदी के प्रचार में प्रोफ़ेसर वेद प्रकाश बटुक के योगदान पर प्रकाश डाला। हिंदी शिक्षा संघ, दक्षिण अफ़्रीका की छात्रा सुश्री सीया सुकाय ने दक्षिण अफ़्रीका का एक लोकगीत प्रस्तुत किया। श्री गुरमन सिंह सेठी ने न्यूज़ीलैंड की प्रमुख भाषा माओरी में प्रसिद्ध कहावतों का भावार्थ हिंदी में प्रस्तुत किया। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ की छात्रा, सुश्री एकता मलिक ने मानव कल्याण से संबंधित कौरवी लोककथा पर प्रकाश डाला। दक्षिण अफ़्रीका से श्री हीरालाल शिवनाथ ने बताया कि सन् 1860 में उत्तर भारत से हिंदी भाषा अपने ग्रामीण स्वरूप में नेटाल आई और यहाँ पर विकसित हिंदी भाषा का नाम 'नेटाली हिंदी' पड़ा। न्यूज़ीलैंड से श्री रोहित कुमार 'हैप्पी' ने देश की सभ्यता व संस्कृति को समझने में लोकोक्तियों और कहावतों के महत्त्वपूर्ण योगदान को रेखांकित किया। भारत से प्रो. नवीनचन्द्र लोहनी ने कौरवी भाषा की विशेषता पर विस्तार से अपने विचार प्रस्तुत किए। प्रोफ़ेसर वेद प्रकाश बटुक ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि लोक-साहित्य और इतिहास के लेखन से समाज को बदला जा सकता है। विश्व हिंदी सचिवालय के वरिष्ठ सहायक संपादक, श्री प्रकाश वीर ने कार्यक्रम का संचालन किया।

3 फ़रवरी, 2024 को विश्व हिंदी सचिवालय ने **'हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि - भाग 10'** विषयक आभासी कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें सरकारी डिग्री कॉलिज मट्टन कश्मीर की छात्रा, सुश्री लक्ष्मी कुमारी ने भक्तिकालीन साहित्य के महत्त्व को उजागर किया। त्रिभुवन विश्वविद्यालय काठमांडू, नेपाल की छात्रा श्रीमती रन्जु कुमारी गुप्ता ने 'गोदान' उपन्यास पर अपने विचार प्रस्तुत किए। ताजिक राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की छात्रा, सुश्री मगफ़िरत ने हिंदी साहित्य के अध्ययन का अपना अनुभव साझा किया और जम्मू-कश्मीर से डॉ. मुक्ति शर्मा ने बताया कि हमारी कोशिश है कि बच्चों में हिंदी के प्रति रुचि उत्पन्न हो सके, इसके लिए हम दिन-रात काम कर रहे हैं। नेपाल से डॉ. विनोद कुमार विश्वकर्मा ने त्रिभुवन विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर अध्ययन हेतु हिंदी पाठ्यक्रम की जानकारी दी। ताजिकिस्तान से डॉ. मुश्ताक अहमद ने ताजिक नेशनल यूनिवर्सिटी तथा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ फ़ॉरेन लैंग्वेज में हिंदी की पढ़ाई पर प्रकाश डाला। अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. नरेश मिश्र ने कहा कि सबसे पहले हमें भाषा की मानकता पर ध्यान देना चाहिए। भाषा की मानकता के दो रूप हैं - एक उच्चारण का और दूसरा लेखन का। कार्यक्रम का संचालन श्री प्रकाश वीर ने तथा उपमहासचिव, डॉ. शुभंकर मिश्र ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

('हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि' आभासी कार्यक्रम के सभी संस्करण विश्व हिंदी सचिवालय के औपचारिक यूट्यूब चैनल : HTTPS://WWW.YOUTUBE.COM/@WORLDHINDISECRETARIAT पर उपलब्ध हैं।)

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

हिंदी में अभिव्यक्ति

20 जनवरी, 2024 को विश्व हिंदी सचिवालय ने **'हिंदी में अभिव्यक्ति - भाग 9'** आभासी कार्यक्रम का आयोजन किया। विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने स्वागत-भाषण दिया। सोआस, लंदन विश्वविद्यालय, इंग्लैंड की छात्रा सुश्री अन्ना शमकोवा ने लंदन एवं भारत में हिंदी सीखने का अपना अनुभव बताया। हिंदी संस्थान, श्रीलंका की छात्रा, सुश्री इमाशा आशानी हुलंगमुव ने कहा कि उन्हें बचपन से हिंदी बहुत पसंद है। हिंदू गर्ल्स कॉलिज, मॉरीशस की छात्रा, सुश्री फ़ुरेल रीतिका ख़ुशी ने 'मॉरीशस की स्वतंत्रता' विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। श्री नरेश शर्मा ने इंग्लैंड में हिंदी शिक्षण की चर्चा की। श्रीमती अतिला कोतलावल ने बताया कि श्रीलंका

में 80 से ज़्यादा स्कूलों और 7 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। मॉरीशस से श्रीमती साधना जगरनोथ ने मॉरीशस में हिंदी शिक्षण की नवीन विधियों के प्रयोग पर बात की। अध्यक्षीय संबोधन में डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा ने बताया कि वर्षों तक हिंदी सीखकर भी अगर हम हिंदी बोल नहीं पाते, तो हमारी शिक्षा व्यर्थ हो जाती है। विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव, डॉ. शुभंकर मिश्र ने धन्यवाद ज्ञापित किया तथा श्री प्रकाश वीर ने मंच-संचालन किया।

17 फ़रवरी, 2024 को विश्व हिंदी सचिवालय ने **'हिंदी में अभिव्यक्ति - भाग 10'** विषयक आभासी कार्यक्रम का आयोजन किया। एन.पी.एस. अंतर्राष्ट्रीय विद्यालय, सिंगापुर के छात्र श्री प्रणीत जैन ने अपने वक्तव्य में कहा "मैं हिंदी में सोचता हूँ और इसी के सपने देखता हूँ।" दक्षिण कोरिया से सुश्री गाराम सौ ने यू-ट्यूब की मदद से हिंदी की वर्णमाला एवं साधारण शब्द सीखने की चर्चा की। रूस से सुश्री अनास्थासिया मिखाईलोवा ने भारतीय संस्कृति, लोककथाएँ एवं कला के प्रति अपनी रुझान व्यक्त की। सिंगापुर से श्रीमती प्रेरणा मित्तल ने एन.पी.एस. अंतर्राष्ट्रीय विद्यालय, सिंगापुर में हिंदी की पढ़ाई के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। डॉ. सों यन् वू ने उल्लेख किया कि दक्षिण कोरिया में सन् 1984 से हिंदी-शिक्षण आरंभ हुआ। डॉ. लिउडमिला खोख्लोवा ने बताया कि मास्को विश्वविद्यालय में हिंदी पाठ्यक्रम का उद्देश्य आधुनिक हिंदी के मौखिक और लिखित दोनों रूपों में छात्रों को दक्ष बनाना है। डॉ. एस. तंकमणि अम्मा ने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि भारतीय संस्कृति का मूल उद्देश्य 'वसुधैव कुटुम्बकम' है। कार्यक्रम का संचालन श्री प्रकाश वीर तथा 'हिंदी से प्यार है' के संस्थापक श्री अनूप भार्गव ने किया।

('हिंदी में अभिव्यक्ति' आभासी कार्यक्रम के सभी संस्करण विश्व हिंदी सचिवालय के औपचारिक यूट्यूब चैनल : HTTPS://WWW.YOUTUBE.COM/@WORLDHINDISECRETARIAT पर उपलब्ध हैं।)

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

साक्षात्कार

12 फ़रवरी, 2024 को विश्व हिंदी सचिवालय के 'क्षितिज' रेडियो कार्यक्रम के अतिथि भारत से पधारे, बैंक ऑफ़ बड़ौदा, मुम्बई के महाप्रबंधक पद से सेवानिवृत्त, डॉ. जवाहर कर्नावट रहे। उन्होंने जनसंचार का सबसे महत्त्वपूर्ण माध्यम पत्रकारिता पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, सोशल मीडिया और अन्य तमाम संचार माध्यमों के बावजूद हिंदी पत्रकारिता सबसे आगे है। उन्होंने विश्व हिंदी सचिवालय में "जन संचार और हिंदी पत्रकारिता" विषय पर आयोजित द्विदिवसीय कार्यशाला के महत्त्व को रेखांकित किया। डॉ. शशि दुकन ने इस साक्षात्कार के लिए डॉ. जवाहर कर्नावट को धन्यवाद-ज्ञापित किया।

11 मार्च, 2024 को विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा 'क्षितिज' रेडियो कार्यक्रम में सामवेद, उपनिषद्, गीता आदि का काव्यानुवाद करने वाली डॉ. मृदुल कीर्ति का साक्षात्कार लिया गया। डॉ. मृदुल कीर्ति ने बताया कि उनका पहला काव्यानुवाद सामवेद था, जिसका विमोचन तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा ने किया। इसके अलावा, उन्होंने पतंजलि योग दर्शन तथा सांख्य योग दर्शन का काव्यानुवाद किया, जिसका विमोचन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने किया। डॉ. मृदुल कीर्ति के अनुसार चाहे हमारी भाषा का रूपांतरण हो या किसी अन्य देश की भाषा का रूपांतरण हो, अनुवाद एक सेतु बन जाता है। अपना साहित्य लिखना, अपने वश में होता है, लेकिन अनुवाद में हम अपनी ओर से एक शब्द भी नहीं लिख सकते हैं। अनुवाद भले ही क्लिष्ट विधा है, फिर भी इसमें विशेष आनंद की अनुभूति होती है।। श्रीमती अश्विना देवी हेमू ने इस साक्षात्कार के लिए डॉ. मृदुल कीर्ति को धन्यवाद-ज्ञापित किया।

25 मार्च, 2024 को मॉरीशस ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन के सहयोग से विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा 'हिंदी सम्मेलन के अनुभव' विषय पर 'क्षितिज' रेडियो कार्यक्रम प्रसारित किया गया। आई.पी. फ़ाउंडेशन, भारत द्वारा विश्व हिंदी सचिवालय में आयोजित द्वि-दिवसीय हिंदी साहित्य सम्मेलन में मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया से पधारीं श्रीमती सुनीति मिश्रा कार्यक्रम की अतिथि रहीं। उनका कहना है कि हिंदी की शिक्षा उन्होंने अपने माता-पिता से प्राप्त की। मूल रूप से वे भारतीय हैं और वर्तमान में मेलबर्न में रह रही हैं। उन्होंने अपनी भाषा और अपनी संस्कृति से जुड़े रहने की बात की। उनके अनुसार मॉरीशस ही एक ऐसा देश है, जहाँ हिंदी का प्रचार-प्रसार इतने व्यापक स्तर पर हुआ है। उन्होंने बताया कि वे कला से जुड़ी हुई हैं तथा मेलबर्न में लोगों को हिंदी से जुड़ने के लिए प्रेरणा देती रहती हैं। डॉ. शशि दुकन ने इस साक्षात्कार के लिए श्रीमती सुनीति मिश्रा को धन्यवाद-ज्ञापित किया।

(विभिन्न देशों के हिंदी विद्वानों के साक्षात्कार विश्व हिंदी सचिवालय की औपचारिक वेबसाइट HTTPS://VISHWAHINDI.COM/NEW/# के 'ओडिओ' भाग पर उपलब्ध है।)

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

लोकार्पण

'लिख दूँ पाती यादों के गलियारे से' शोध-आधार ग्रंथ का लोकार्पण

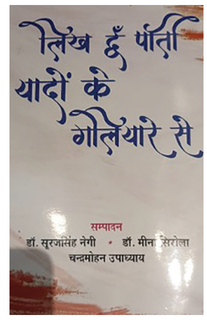

25 फ़रवरी, 2024 को ऑनलाइन आयोजित कार्यक्रम में 'लिख दूँ पाती यादों के गलियारे से' महति शोध-आधार ग्रंथ का लोकार्पण किया गया। डॉ. सूरज सिंह नेगी, डॉ. मीना सिरोला एवं श्री चंद्रमोहन उपाध्याय के संपादन में, डॉ. देवदत्त शर्मा को समर्पित, 90 पत्रों के संकलन की यह अनूठी पुस्तक पाती मुहिम की 12वीं पुस्तक है, जिसके लिए 1800 हस्तलिखित पत्र देश-विदेश से प्राप्त हुए थे। डॉ. शोभनाथ शुक्ल मुख्य अतिथि थे तथा अध्यक्षता डॉ. आरती 'लोकेश' ने की। डॉ. छाया शर्मा ने सुमधुर स्वर में माँ वीणापाणि का आह्वान किया। डॉ. नेगी ने पाती की यात्रा का ब्योरा दिया और इस शोधपरक ऐतिहासिक पुस्तक की संकल्पना से भविष्य तक का मार्ग दिखाया। डॉ. शोभनाथ शुक्ल, प्रभा पारीख, ज्योत्स्ना प्रभा, गोविंद भारद्वाज, डॉ. इंदु गुप्ता तथा डॉ. आरती 'लोकेश' ने वक्तव्य प्रस्तुत किया। समारोह का संचालन विमला नागला ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन श्री चंद्रमोहन ने किया।

साभार : डॉ. आरती 'लोकेश' गोयल का फ़ेसबुक पेज

'स्वयंसिद्धा' और 'नीदरलैंड की लोक कथाएँ' का लोकार्पण

22 मार्च, 2024 को इंदौर के ऐतिहासिक गांधी हॉल स्थित अभिनव कला समाज में शुभ संकल्प समूह व स्टेट प्रेस क्लब के संयुक्त तत्त्वावधान में तथा लोक संस्कृति संस्था : भावांजलि समूह के सहयोग से 'तूलिका के रंग' शीर्षक पर संगोष्ठी में भव्य पुस्तक विमोचन समारोह, लोक सांस्कृतिक कार्यक्रम, होली गीत प्रतिकरण एवं नृत्य मंचन का आयोजन हुआ। कार्यक्रम दो सत्रों में विभाजित था। प्रथम सत्र में

लोक गीत, लोक नृत्य व होली गीत प्रस्तुति हुई तथा द्वितीय सत्र में पुस्तक 'स्वयंसिद्धा' (साझा संकलन) और लेखिका डॉ. ऋतु शर्मा नन्नन पांडेय द्वारा रचित 'नीदरलैंड की लोक कथाएँ' पुस्तक का विमोचन हुआ। इसके पश्चात् अतिथि उद्बोधन हुआ। अंतिम चरण में लेखिका को सम्मानित किया गया तथा विभा जैन ने लेखिका की पुस्तक में से एक कथा 'तीन सोने के बाल' का वाचन किया।

साभार : मातृभारती

सिंगापुर में 'सिंगापुर की चयनित रचनाएँ' और 'ज़िंदगी अनलिमिटेड' का लोकार्पण

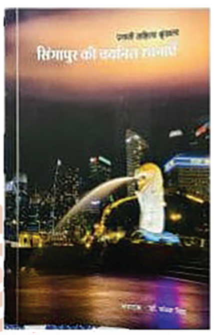

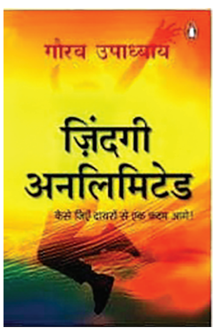

20 जनवरी, 2024 को सिंगापुर संगम, सिंगापुर ने भारतीय उच्चायोग, सिंगापुर के सहयोग से आर्य समाज भवन, सिंगापुर में पुस्तक विमोचन कार्यक्रम का आयोजन किया। मुख्य अतिथि चांसरी प्रमुख, भारतीय उच्चायोग सिंगापुर, श्री शिवजी तिवारी रहे। मुख्य अतिथि द्वारा डॉ. संध्या सिंह की पुस्तक 'सिंगापुर की चयनित रचनाएँ' और श्री गौरव उपाध्याय द्वारा लिखित 'ज़िंदगी अनलिमिटेड' का लोकार्पण किया गया।

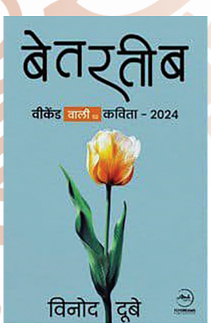

24 मार्च, 2024 को सिंगापुर संगम, सिंगापुर ने एक और पुस्तक विमोचन का कार्यक्रम आयोजित किया। मुख्य अतिथि श्री शिवजी तिवारी रहे। श्री विनोद दूबे के उपन्यास 'ओक्का बोक्का' तथा काव्य संग्रह 'बेतरतीब' का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम का आयोजन सिद्ध पीठ श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर, सिंगापुर में हुआ।

साभार : सिंगापुर संगम का फ़ेसबुक पेज

सम्मान एवं पुरस्कार

यू.के. हिंदी सम्मान समारोह

12 जनवरी, 2024 को भारतीय उच्चायोग, लंदन में विश्व हिंदी दिवस कार्यक्रम का आयोजन हुआ। हर वर्ष विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर यू.के. हिंदी सम्मान देने की परंपरा वर्ष 2006 से भारतीय उच्चायोग, लंदन में आरंभ की गई थी। 2024 का यू.के. हिंदी सम्मान पाने वाले विद्वानों व संस्थाओं में श्रीमती शैल अग्रवाल हैं, जिन्हें श्री 'हरिवंश राय बच्चन लेखन सम्मान' प्राप्त हुआ। श्री शिवकांत शर्मा को 'आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी हिंदी पत्रिकारिता सम्मान', श्रीमती शशी वालिया सिंह को 'सर जॉन गिलक्रिस्ट हिंदी शिक्षण सम्मान', भवन, लंदन परिसर को 'सर फ़ेड्रिक पिंकट हिंदी प्रचार-प्रसार सम्मान' तथा श्रीमती शन्नो अग्रवाल को 'लक्ष्मी मल्ल सिंघवी हिंदी पुस्तक प्रकाशन अनुदान' प्रदान किए गए।

साभार : भारतीय उच्चायोग, लंदन का फ़ेसबुक पेज

बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन में स्मृति-सह-सम्मान समारोह

24 जनवरी, 2024 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन में पं. राम नारायण शास्त्री स्मारक न्यास के तत्त्वावधान में स्मृति-सह-सम्मान समारोह का आयोजन हुआ। समारोह का उद्घाटन केंद्रीय राज्यमंत्री माननीय श्री अश्विनी कुमार चौबे ने किया। इस अवसर पर उन्होंने सुप्रसिद्ध सामाजिक-चिंतक, श्री सूबेदार सिंह एवं बिहार लोक सेवा आयोग की सदस्या, प्रो. दीप्ति कुमारी को 'अक्षर-पुरुष पं. राम नारायण शास्त्री स्मृति सम्मान' से अलंकृत किया। उन्होंने माध्यमिक बोर्ड की परीक्षा-2023 में उच्चतम अंक प्राप्त करने वाली, निर्मला शिक्षा भवन उच्च विद्यालय, शाहपुर की छात्रा सुश्री नम्रता कुमारी को 'ईश्वरी देवी सर्वश्रेष्ठ गणितज्ञ छात्रा पुरस्कार' और 2551 रु. की राशि प्रदान की।

समारोह के मुख्य अतिथि और बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री श्री तार किशोर प्रसाद ने पं. शास्त्री को नमन करते हुए कहा कि शास्त्री जी एक ऐसे साधक साहित्यकार थे, जिन्होंने अपनी बौद्धिक-रचनाओं से समाज का मार्गदर्शन किया। सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने कहा कि शास्त्री जी को स्मरण करना किसी तपस्वी ऋषि के सान्निध्य में जाने के समान पावन है।

साभार : बीरेंद्रयादवन्यूज़.कॉम

तीन दिवसीय राष्ट्रीय वनमाली कथा सम्मान समारोह

26-28 फ़रवरी, 2024 को सुप्रतिष्ठित कथाकार, शिक्षाविद् तथा विचारक स्वर्गीय जगन्नाथ प्रसाद चौबे 'वनमाली' के रचनात्मक योगदान और स्मृति को समर्पित संस्थान वनमाली सृजन पीठ, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय एवं आईसेक्ट पब्लिकेशन द्वारा तीन दिवसीय राष्ट्रीय वनमाली कथा सम्मान समारोह का भव्य आयोजन रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय परिसर में किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रतिष्ठित साहित्यकार ममता कालिया रहीं। जापान के हिंदी एवं भारतीय भाषा विद्वान पद्मश्री तोमियो मिज़ोकामी के आत्मीय सान्निध्य में कार्यक्रम का आयोजन हुआ और अध्यक्षता संतोष चौबे ने की। मुख्य अतिथि ममता कालिया ने कहा कि वनमाली सृजन पीठ की विश्वसनीयता की वजह से दूर-दूर से, सात समुंदर पार करके भी लोग आ रहे हैं, क्योंकि संतोष

चौबे ने इसकी भव्यता को कड़ी मेहनत करके स्थापित की है और इसे एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था का स्वरूप दिया है। प्रो. तोमियो मिज़ोकामी ने कहा कि मैं जापानी होने के बावजूद हिंदी के सौंदर्य को समझता हूँ, साहित्य को समझता हूँ। मैंने हिंदी को पढ़ा है और इसकी समृद्धि देखकर मन को बहुत संतुष्टि मिलती है।

इस अवसर पर दस अलग-अलग श्रेणियों में रचनाकारों को वनमाली कथा सम्मानों से अलंकृत किया गया, जिसमें 'वनमाली कथाशीर्ष सम्मान' से सुप्रसिद्ध लेखिका स्व. उषा किरण खान (पटना) को मरणोपरांत सम्मानित किया गया। 'वनमाली राष्ट्रीय कथा सम्मान' वरिष्ठ कथाकार शिवमूर्ति (लखनऊ) को दिया गया। इसके तहत रचनाकारों को शॉल, श्रीफल, प्रशस्ति-पत्र एवं एक-एक लाख रुपये की सम्मान राशि दी गई।

'वनमाली कथा मध्यप्रदेश सम्मान' वरिष्ठ कथाकार डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी (भोपाल) को, 'वनमाली युवा कथा सम्मान' युवा कथाकार आशुतोष (सागर) को, 'वनमाली कथा आलोचना सम्मान' आलोचक राकेश बिहारी (प्रयागराज) को, 'वनमाली कथा पत्रिका सम्मान' लखनऊ से प्रकाशित चर्चित पत्रिका 'तद्भव' को प्रदान किए गए। 'वनमाली प्रवासी भारतीय रचनाकार सम्मान' वरिष्ठ कथाकार श्री तेजेन्द्र शर्मा (लंदन) को और 'वनमाली कथेतर सम्मान' श्री अनिल यादव (दिल्ली) को तथा 'वनमाली विशिष्ट कथा सम्मान' सुश्री प्रत्यक्षा (दिल्ली) को दिया गया। इसके अलावा अरविंद मिश्र को 'वनमाली विज्ञान कथा सम्मान' मिला। सभी सम्मानित रचनाकारों को शॉल-श्रीफल प्रशस्ति-पत्र एवं 51 हज़ार रुपये की सम्मान राशि प्रदान कर अलंकृत किया गया।

साभार : इंटीग्रेटेड ट्रेड

श्रद्धांजलि

डॉ. उषा किरण खान

11 फ़रवरी, 2024 को हिंदी और मैथिली भाषाओं के कथा-साहित्य में विशिष्ट स्थान रखने वाली लेखिका, डॉ. उषा किरण खान का निधन हुआ। वे बिहार की गौरव लेखिका थीं। महिला, गाँव और किसानों पर जीवंत उपन्यास लिखने वाली वरिष्ठ लेखिका का जन्म वर्ष 1945 में दरभंगा ज़िले के हायाघाट प्रखंड अंतर्गत मझौलिया गाँव में हुआ था। मैथिली साहित्य में स्थापित होने के बाद उन्होंने हिंदी साहित्य की ओर अपना कदम बढ़ाया। वर्ष 2015 में भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मश्री' से सम्मानित किया। नारी-विमर्श की इस सख्त लेखिका ने मिथिला और बिहार ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सांस्कृतिक मर्यादा को भी देश-विदेश तक पहुँचाया है। अमेरिका, रूस और मॉरीशस आदि देशों में रहने वाले मैथिलों के बीच भी इनके साहित्य का प्रकाश इनके व्यक्तित्व के साथ प्रकाशित होता रहा है। वर्ष 2011 में उन्होंने मैथिली उपन्यास 'भामति' एक प्रेम कथा के लिए 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' जीता। वर्ष 2012 में उनके उपन्यास 'सिरजनहार' के लिए भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् ने 'पुष्पांजलि साहित्य सम्मान' से सम्मानित किया। 'पानी पर लकीर', 'फागुन के बाद', 'गीली पाक', 'कासवन', 'दूबजान', 'कहाँ गए मेरे उगना', 'हीरा डोम', 'फागुन', 'डैडी बदल गए हैं', 'नानी की कहानी', 'सात भाई', 'लड़ाकू जनमेजय' आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

साभार : जागरण.कॉम

पंडित हरिराम द्विवेदी

8 जनवरी, 2024 को हिंदी और भोजपुरी के प्रख्यात गीतकार, कवि एवं साहित्यकार पंडित हरिराम द्विवेदी 'हरि भैया' का निधन हो गया। पंडित हरिराम द्विवेदी का जन्म 12 मार्च, 1936 को मिर्ज़ापुर के शेरवा गाँव में हुआ था। पंडित हरिराम द्विवेदी आकाशवाणी और भोजपुरी जगत् से जुड़े हुए थे और बहुत लोकप्रिय थे। उन्हें 'साहित्य अकादमी भाषा सम्मान', 'राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार', 'साहित्य भूषण', 'साहित्य सारस्वत सम्मान' सहित कई अन्य पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। उनके मुख्य कविता-संग्रह 'अंगनइया', 'पातरि पीर', 'जीवनदायिनी गंगा', 'साई भजनावली', 'पानी कहे कहानी', 'पहचान', 'नारी', 'रमता जोगी', 'बैन फ़कीर', 'हाशिये का दर्द', 'नदियो गइल दुबराय' आदि हैं।

साभार : अमरउजाला.कॉम

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत की ओर से पुण्यात्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि।

प्रधान संपादक	:	डॉ. माधुरी रामधारी
संपादक	:	डॉ. शुभंकर मिश्र
वरिष्ठ सहायक संपादक	:	श्री प्रकाश वीर
सहायक संपादक	:	श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी
पता	:	विश्व हिंदी सचिवालय, इंडिपेंडेंस स्ट्रीट, फ़ेनिक्स 73423, मॉरीशस World Hindi Secretariat, Independence Street, Phoenix 73423, Mauritius
फ़ोन	:	(230) 660 0800
ई-मेल	:	info@vishwahindi.com
वेबसाइट	:	www.vishwahindi.com
डेटाबेस	:	www.vishwahindidb.com
फ़ेसबुक	:	www.facebook.com/groups/vishwahindisachivalay/
ट्विटर	:	@WHSMauritius
इंस्टाग्राम	:	WHS_08

संपादकीय

'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भाषा है हिंदी

अपनी हिंदी भाषा न केवल भारत की प्रमुख भाषा है, बल्कि यह विश्व में मानवता, सहिष्णुता और एकता का सशक्त संदेश भी देती है। इसका व्यापक और गहन अर्थ 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात् *पूरा संसार एक परिवार* है की भावना को अभिव्यक्त करता है। कहा गया है - **अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्। उदार-चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥** अर्थात् 'यह मेरा है, वह पराया है', ऐसा विचार केवल संकीर्ण मन वाले लोग करते हैं; परंतु उदार हृदय वाले लोगों के लिए तो पूरी पृथ्वी ही एक परिवार है। यह प्राचीन श्लोक भारतीय दर्शन की उस व्यापक मान्यता को दर्शाता है, जिसमें सीमाएँ, जाति, धर्म और भाषा के बंधन से ऊपर उठकर सम्पूर्ण मानवता को एक परिवार के रूप में देखा गया है। यह भारतीय विचार आज के वैश्विक युग में और भी प्रासंगिक हो उठा है, जब समाज में कई प्रकार की सामाजिक विसंगतियाँ बढ़ रही हैं। इस परिप्रेक्ष्य में हिंदी के माध्यम से **वसुधैव कुटुम्बकम्** का हमारा संदेश मानवता, प्रेम और सहयोग की भावना को पुष्ट करता है।

हिंदी भाषा इन विचारों को जन-जन तक पहुँचाने और उन्हें वर्तमान संदर्भ में पुनः जागृत करने का कार्य कर रही है। हिंदी साहित्य में भी इस सार्वभौमिकता के भाव को विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त किया गया है। कवि, लेखक और कलाकार हिंदी के माध्यम से मानवता के व्यापक संदेश को सरल, सुंदर और प्रभावशाली भाषा में प्रस्तुत कर रहे हैं। हिंदी का यह सांस्कृतिक और दार्शनिक योगदान इसे भाषा से कहीं अधिक एक मिशन बनाता है।

इसमें कोई दो राय नहीं कि विश्व में हिंदी का 'वसुधैव कुटुम्बकम्' संदेश किसी एक सेतु का काम करता है। भारत के बाहर भी हिंदी का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। अफ्रीका, अमेरिका, यूरोप, और दक्षिण-पूर्व एशिया जैसे देशों में हिंदी भाषा और संस्कृति के प्रति बढ़ती रुचि ने एक वैश्विक हिंदी परिवार का निर्माण किया है। प्रवासी भारतीयों के माध्यम से हिंदी का यह संदेश वहाँ के स्थानीय समाजों में सह-अस्तित्व और सांस्कृतिक समरसता को बढ़ावा देता है। यह भाषा न केवल संवाद का माध्यम है, बल्कि यह एक साझा सांस्कृतिक और मानवीय पहचान का प्रतीक भी है। ऐसे में अपनी हिंदी अखिल विश्व को यह सिखाती है कि चाहे हम किसी भी क्षेत्र, धर्म या जाति से क्यों न हों, हम सब एक ही मानव परिवार के सदस्य हैं।

हिंदी का यह मानवीय संदेश शिक्षा के क्षेत्र में भी गहराई से समाया हुआ है। विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा और साहित्य का अध्ययन केवल भाषाई कौशल तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके साथ भारतीय दर्शन और सांस्कृतिक विविधता जैसे सिद्धांतों की भरपूर शिक्षा प्रदान की जा रही है। इससे विद्यार्थी न केवल एक भाषा-विशेष सीखते हैं, बल्कि वैश्विक सहिष्णुता, सांस्कृतिक समझ और मानवीय मूल्यों के प्रति संवेदनशील भी बनते हैं। ठीक इसी प्रकार तकनीकी और वैज्ञानिक क्षेत्रों में भी हिंदी लगातार प्रगति कर रही है। डिजिटल टूल्स, अनुवाद सॉफ़्टवेयर और ई-लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म ने हिंदी को आधुनिक युग की आवश्यकताओं के अनुरूप और अधिक सशक्त बना दिया है, जिससे यह भाषा विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के क्षेत्रों में भी अपनी उपयोगिता सिद्ध कर रही है।

हिंदी के इस सरोकारी भूमिका में साहित्यकारों ने एक बड़ी भूमिका निभाई है। ये रचनाकार पूरे पाठक समाज को अपनी रचनाओं के माध्यम से अनवरत प्रेम, करुणा और शांति का संदेश देते रहे हैं। इनकी रचनाएँ एक ऐसे समाज के निर्माण की कल्पना करती हैं, जहाँ लोग एक-दूसरे के प्रति संवेदनशील, सहयोगी और समता-गुणता में विश्वास करने वाले हों। इसी प्रकार हिंदी फ़िल्मों, नाटकों, गीतों और कविताओं ने भी 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को आम जनमानस तक पहुँचाया है। हिंदी मीडिया, चाहे वे समाचार पत्र हों, रेडियो चैनल हों या डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म, निरंतर इस अभीष्ट वैश्विक संदेश का प्रसार कर रहे हैं। निस्संदेह हिंदी का यह मानवीय स्वर केवल भारत में ही नहीं, बल्कि दुनिया के कोने-कोने में गुंजायमान है।

इस सुखद परिदृश्य में यह बेहद अच्छी बात है कि आज की युवा पीढ़ी हिंदी को केवल एक भाषा नहीं, बल्कि विश्व से जुड़ने का सेतु मान रही है। वैश्वीकरण के दौर में हिंदी सीखने और बोलने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। युवा न केवल इसके सांस्कृतिक और व्यावहारिक महत्व को बखूबी पहचान रहे हैं, बल्कि इसे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के संदेश को फैलाने का प्रभावी माध्यम भी मान रहे हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि यदि हम आधुनिक तकनीक और संसाधनों का उपयोग करें, तो हिंदी का यह संदेश और व्यापक रूप से दिग्-दिगंतर पहुँच सकता है। इस डिजिटल युग में अब हिंदी साहित्य का अधिकाधिक अनुवाद एवं अन्य कार्यक्रमों जैसे कि विश्व हिंदी दिवस का आयोजन और वैश्विक स्तर पर हिंदीमूलक विविध प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों आदि के आयोजन से विश्व मंच पर हिंदी सर्वसुलभ और समर्थ भाषा के रूप में निस्संदेह उपस्थित हो सकेगी।

हिंदी के संरक्षण और संवर्धन के साथ-साथ इसके वैश्विक प्रचार-प्रसार पर ध्यान देना समय की माँग है। विज्ञान और तकनीक में हिंदी की शब्दावली का विकास, अंतर्राष्ट्रीय पाठ्यक्रमों में हिंदी का समावेश और युवाओं को आकर्षित करने वाले आधुनिक माध्यमों का प्रयोग, ये सभी उपाय 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के आदर्श को और प्रभावी बना सकते हैं। हिंदी की गहराई और समृद्धि इसे विश्व की उन चुनिंदा भाषाओं में स्थान देती है, जो मानवता के सर्वोच्च आदर्शों को जन्म देती हैं।

हिंदी के माध्यम से 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के संदेश का प्रसार हम सभी का साझा कर्तव्य है। यह केवल एक आदर्श नहीं अपितु सम्पूर्ण मानव जाति के लिए एक मार्गदर्शक है। हिंदी न केवल भारत की आत्मा है, बल्कि यह विश्व के लिए प्रेम, एकता और सहयोग का एक अटूट स्तंभ भी है। हमें इस संदेश को गर्व के साथ फैलाना चाहिए, ताकि हम प्रेम और सम्मान के साथ एक उज्ज्वल भविष्य की दिशा में बढ़ सकें।

हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के क्रम में 'विश्व हिंदी समाचार' के इस अंक में प्रस्तुत विविध उत्साहवर्धक सूचनाएँ निश्चय ही आपको प्रेरित करेंगीं। हमें आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आप अपने अमूल्य सहयोग और सक्रिय सहभागिता से इस भाषा अभियान में कदम-से-कदम मिलाकर आगे बढ़ेंगे, जिससे हिंदी के वैश्विक स्वर को अपेक्षाकृत प्रखरता और विस्तार मिलेगा।

अस्तु! चरैवेति... चरैवेति... चरैवेति...

निरंतर प्रगतिशील रहिए, यत्नशील रहिए!
हमारी यही मंगलकामना है - शुभम् भूयात्!

डॉ. शुभंकर मिश्र
उपमहासचिव

Newsletter WHS March 2024v3.indd 16 14/08/2025 16:12